ॐ श्री गंगाईनाथाय नमः

स्पिरिचुअल साइंस

Spiritual Science

अध्यात्म विज्ञान सत्संग केन्द्र, जोधपुर द्वारा प्रकाशित

वर्ष: 14 अंक: 158 हिन्दी-अंग्रेजी मासिक ई-पत्रिका जुलाई 2021

क्या एक निर्जीव चित्र सजीव पर प्रभाव डाल सकता है ?

प्रत्यक्ष को प्रमाण क्या ?

सद्गुरुदेव सियाग की दिव्य वाणी में संजीवनी मंत्र सुनकर इनके चित्र पर ध्यान करके देखें। (अपने घर बैठे ही)

मंत्र दीक्षा के लिये डायल करें - 07533006009

गुरु चरणों की महिमा

www.the-comforter.org

गुरु पादाम्बुजं स्मृत्वा, जलं शिरसि धारयेत् ।
सर्व तीर्थावगाहस्य संप्राप्नोति फलं नरः ।।

अर्थ– गुरु चरणों का ध्यान करके, उनके चरणामृत को जो व्यक्ति अपने मस्तक पर धारण करता है, उसको सब तीर्थों में स्नान का फल प्राप्त हो जाता है ।

– गुरु गीता

ॐ श्री गंगाईनाथाय नमः

स्पिरिचुअल साइंस

Spiritual Science

अध्यात्म विज्ञान सत्संग केन्द्र, जोधपुर द्वारा प्रकाशित

गुरुदेव श्री रामलाल जी सियाग

बाबा श्री गंगाईनाथ जी योगी (ब्रह्मलीन)

वर्ष: 14 अंक: 158 हिन्दी-अंग्रेजी मासिक ई-पत्रिका जुलाई 2021

❖

संस्थापक एवं संरक्षक:

पूज्य सद्गुरुदेव
श्री रामलाल जी सियाग

❖

सम्पादक:

रामूराम चौधरी

कार्यालय:
स्पिरिचुअल साइंस पत्रिका

अध्यात्म विज्ञान सत्संग केन्द्र
पो. बॉक्स नं. - 41,
होटल लेरिया के पास,
चौपासनी, जोधपुर (राज.) भारत

+91 291 2753699
+91 9784742595
E-mail:
spiritualscienceavsk@gmail.com

Head Office
Spiritual Science Magazine:
Adhyatma Vigyan Satsang Kendra
Post Box No. - 41
Near Hotel Lariya, Chopasani,
Jodhpur (Raj.) India - 342001

+91 291 2753699
+91 9784742595
E-mail:
spiritualscienceavsk@gmail.com
Website:
www.the-comforter.org

अनुक्रम

प्रार्थना 4
हिन्दू धर्म क्या है ? 6
सद्गुरुदेव का प्रवचन (जुलाई 2002 गुरु पूर्णिमा) 9
आध्यात्मिक पथप्रदर्शक-गुरु 14
बिल्ली रूपी वासना 17
कहानी- गुरु की आज्ञापालन से ब्रह्मज्ञान 20
साधना विषयक बातें 23
मोक्ष मूलं गुरु कृपा 28
हिन्दू धर्म विश्व धर्म होगा 32
गुरु महिमा 33
समर्थ सद्गुरुदेव का मिलना 34
चेतना 35
सिद्ध-योगियों की महिमा 38
रूपान्तरण (Transformation) 41
Kundalini Awakening 46
सद्गुरुदेव की दिव्य लेखनी से 50
योग के आधार 51
यादों के पल 53
सिद्धयोग :- शक्तिपात दीक्षा द्वारा कुण्डलिनी जागरण 54
ध्यान की विधि 57

प्रार्थना

हे प्रभो ! हे सर्वविघ्नविनाशक ! तेरी जय हो !

वर दे कि हमारे अंदर की कोई भी चीज तेरे कार्य में बाधक न हो।

वर दे कि कोई भी चीज तेरी अभिव्यक्ति में रुकावट न डाले।

वर दे कि हर वस्तु में तथा प्रत्येक क्षण तेरी ही इच्छा पूर्ण हो।

हम यहाँ तेरे सम्मुख उपस्थित हैं ताकि हमारे अंदर,

हमारी सत्ता के अंग-प्रत्यंग में,

उसके प्रत्येक कार्य में,उसकी सर्वोच्च ऊंचाईयों से लेकर

प्रार्थना

शरीर के क्षुद्रतम कोशों तक में तेरी ही इच्छा कार्यान्वित हो।
ऐसी कृपा कर कि हम तेरे प्रति संपूर्ण रूप से
और सदा के लिए 'एकनिष्ठ' बन सकें।
हम अन्य सब प्रभावों से अलग रहते हुए पूरी तरह से
तेरे ही प्रभाव के अधीन हो रहना चाहते हैं।
वर दे कि हम तेरे प्रति एक गंभीर और तीव्र कृतज्ञता रखना कभी न भूलें।
कृपा कर कि प्रत्येक क्षण हमें जो अद्भुत वस्तुएँ तेरी देन के रूप में मिलती हैं,
उनमें से किसी का भी कभी अपव्यय न करें।
ऐसा वर दे कि हमारे अंदर की प्रत्येक चीज तेरे कार्य में सहयोग दे
और सब कुछ तेरी सिद्धि के लिए तैयार हो जाये।
तेरी जय हो, हे परमेश्वर ! हे समस्त सिद्धियों के अधीश्वर।
तू हमें अपनी विजय में सक्रिय और ज्वलंत,
अखण्ड और अचल-अटल विश्वास प्रदान कर।
तेरी जय हो, हे परमेश्वर ! हे समस्त सिद्धियों के अधीश्वर।

– श्रीमाँ (श्री अरविन्द आश्रम, पाण्डिचेरी)

www.the-comforter.org

"हिन्दू धर्म क्या है?"

गुरु पूर्णिमा के पावन पर्व पर समस्त गुरु भाई-बहनों को हार्दिक शुभकामनाएँ। हमारे सनातन धर्म में गुरु-शिष्य का प्रगाढ़ संबंध है। इस दिन भगवान् वेदव्यास जी ने अपने शिष्यों को आध्यात्मिक ज्ञान दिया था। उस दिन के बाद से यह पर्व बड़ी श्रद्धा और भक्तिभाव से मनाया जाता है। धर्म और दर्शन को बनाए रखने का कार्य सद्गुरु के हाथों में ही होता है।

महर्षि श्री अरविन्द ने धर्म पर विस्तार से लिखा है-

जिस धार्मिक संस्कृति को आज हम हिन्दू धर्म के नाम से पुकारते हैं.... उसने अपना कोई नाम नहीं रखा, क्योंकि उसने स्वयं अपनी कोई सांप्रदायिक सीमा नहीं बांधी; उसने सारे संसार को अपना अनुयायी बनाने का दावा नहीं किया, किसी एकमात्र निर्दोष सिद्धान्त की प्रस्थापना नहीं की, मुक्ति का कोई एक ही संकीर्ण पथ या द्वार निश्चित नहीं किया; वह कोई मत या पंथ की अपेक्षा कहीं अधिक मानव आत्मा के ईश्वरोन्मुखा प्रयास की एक सतत्-विस्तारशील परंपरा थी। आध्यात्मिक आत्मनिर्माण और आत्म-उपलब्धि के लिए एक बहुमुखी और बहुस्तरीय विशाल व्यवस्था होने के कारण, उसे अपने विषय में 'सनातन धर्म' के उस एकमात्र नाम से, जिसे वह जानती थी,

www.the-comforter.org

चर्चा करने का कुछ अधिकार था।

एष धर्मः सनातनः (यह सनातन धर्म है)

एष धर्मः सनातनः। हिन्दू धर्म कोई सम्प्रदाय या कट्टरपंथी मत नहीं है, सूत्रों का गट्ठर नहीं है, सामाजिक नियमों की आचार संहिता नहीं है, बल्कि यह है शक्तिशाली, शाश्वत और सार्वभौमिक सत्य। इसने भगवान् की अनंतता के साथ तादात्म्य के अन्तिम दिव्य लक्ष्य के लिए मनुष्य की आत्मा को तैयार करने का रहस्य जान लिया है। लेकिन हिन्दू धर्म है क्या ?

यह धर्म क्या है जिसे हम सनातन कहते हैं ? यह हिन्दू धर्म मात्र इसलिए कहलाया क्योंकि यह हिन्दू राष्ट्र में बढ़ा, क्योंकि इस प्रायद्वीप में यह समुद्र और हिमालय से घिरे होने के कारण एकान्त में विकसित हुआ, क्योंकि इस पावन और प्राचीन भूमि में इसे युगों तक सुरक्षित रखने का कार्यभार आर्यजाति को सौंपा गया था। लेकिन यह किसी एक देश में सीमाबद्ध नहीं है, यह विश्व के किसी भी देश की सदा के लिए निजी बपौती नहीं है। जिसे हम हिन्दू धर्म कहते हैं, वह वास्तव में सतातन धर्म है क्योंकि यह सार्वभौमिक धर्म ही है जो अन्य सबको गले लगाता है।

यदि कोई धर्म सार्वभौमिक नहीं है तो वह सनातन भी नहीं हो सकता। एक संकीर्ण-धर्म, साम्प्रदायिक धर्म, ऐकान्तिक धर्म का उद्देश्य व अवधि सीमित ही होती है। यही एकमात्र ऐसा धर्म है जो विज्ञान के आविष्कारों और दर्शनशास्त्र के चिन्तन को सम्मिलित करते हुए और उनका पूर्वानुमान करते हुए भौतिकवाद पर विजय पा सकता है। यही एकमात्र वह धर्म है जो बराबर मानवजाति को यह कहता है कि भगवान् हमारे समीप हैं और उन तक पहुँचने के सभी संभव उपायों को अपनाता है।

www.the-comforter.org

यह अकेला ऐसा धर्म है जो हर क्षण इस सत्य पर बल देता है और जिसे सब धर्म स्वीकार करते हैं कि भगवान् सब मनुष्यों में है, सब वस्तुओं में है और यह कि हम भगवान् में संचरण करते हैं और उसी से हमारा जीवन है। यही अकेला धर्म है जो हमें इस सत्य को समझने और विश्वास करने के योग्य नहीं बनाता बल्कि हमारी सत्ता के प्रत्येक भाग को इसे चरितार्थ करने के योग्य भी बनाता है। यही अकेला धर्म है जो विश्व को दर्शाता है कि विश्व क्या है? यह है वासुदेव की लीला। यही अकेला धर्म है जो हमें सिखाता है कि इस लीला में हम सर्वोत्तम ढंग से अपनी भूमिका कैसे अदा कर सकते हैं? इसके सूक्ष्मतम नियम और सर्वोत्तम विधान कौन से हैं? यही वह अकेला धर्म है जो जीवन को उसके छोट-से-छोटे ब्यौरे में भी धर्म से अलग नहीं करता, जो यह जानता है कि 'अमरत्व' क्या है और जिसने मृत्यु की अवश्यंभाविता को हमसे सर्वथा दूर कर दिया है।

अन्य धर्म प्रधानतः विश्वास और दीक्षा के धर्म हैं लेकिन सनातन धर्म स्वयं जीवन ही है। यह विश्वास का विषय उतना नहीं, जितना जीवन में उतारने का है। यही वह धर्म है, जिसे मानवजाति की मुक्ति के लिए पुरातन काल से इस प्रायद्वीप के एकान्त में संजोया गया था। इस धर्म को प्रदान करने के लिए भारत जाग रहा है। भारत इस तरह नहीं जाग रहा जैसे और देश जागते हैं- अपने लिए या जब शक्तिशाली हो जाये तो दुर्बल को कुचलने के लिए। वह जाग रहा है, उस शाश्वत आलोक को विश्व में विकीर्ण करने के लिए जो उसे सौंपा गया है। भारत सदैव मानवजाति के लिए जिया है, अपने लिए नहीं और उसे अपने लिए नहीं मानवजाति के लिए महान् होना है।

◆◆◆

www.the-comforter.org

सन् 2002 के गुरु पूर्णिमा महोत्सव पर पूज्य सद्गुरुदेव सियाग का प्रवचन

गुरु क्या करता है, देता लेता कुछ नहीं, लेकिन बड़ी अजीब तरह की भ्रांतियाँ पैदा हो गई है, हमारे धर्म में। ये मनुष्य शरीर जो है, हिन्दू का भी वही है, मुसलमान का भी वैसा ही है, ईसाई का भी वही है। किसी भी धर्म का व्यक्ति हो, इस शरीर में कोई अंतर नहीं है। एक मात्र हमारा धर्म जो है, विश्व शांति की बात करता है, और मानव मात्र को संबोधित करके बोलता है। ईसाई का अलग है, मुसलमानों का अलग है, दूसरों का अलग है, ऐसा नहीं कहता है। ये बात ठीक है, हम पतन के काल से गुजरते हुए आ रहे हैं।

मगर गुरु तो मानव मात्र में परिवर्तन लाने की बात करता है। अब वो दूसरे धर्म वाले लोग अपने-अपने हिसाब से सोचते है। हमने भी उन परिस्थितियों के कारण अपने आपको अलग-अलग ग्रुपों में बाँटकर के संकीर्ण दायरे में कैद कर लिया है। परन्तु हमारा धर्म इतना ही नहीं है। ये मनुष्य के विकास की क्रिया है, आप लोगों के स्वयं के विकास की क्रिया है। मेरे शरीर में और आपके शरीर में कोई अंतर नहीं है। जो आपके पास है वो ही मेरे पास है। मैंने अपने गुरु की कृपा से, मेहरबानी से उसको जीवन में काम में लेना सीख लिया है, आप भी सीख सकते हो, ये आपका अपना विकास है, और विकास भी ऐसा जो आज तक नहीं हुआ।

इसीलिए हमारा देश ही नहीं, संसार भी बड़ा आश्चर्य कर रहा है, मोक्ष-वोक्ष के लिए नहीं, बल्कि इसीलिए कि बीमारियाँ खत्म हो रही हैं। अब ये सारा परिवर्तन धर्म पर आधारित है इसीलिए संसार के धर्म जो हैं, बहुत असमंजस में हैं। इस वक्त विश्व की जो स्थिति है,

www.the-comforter.org

जो संसार में घटनाएँ घटती हैं, उससे हम अपने आपको अलग तो नहीं रख सकते। इस भूमंडल पर रहना है तो उन लोगों के साथ, वो लोग जैसा आपस में कर रहे है, हमको भी उसी हिसाब से माहौल में चलना है। आज धर्मों का टकराव शुरू हो गया है , उनसे हम अलग नहीं रह सकते। अब जो धर्म जिस कारण से पैदा हुए, वो अपने हिसाब से चल रहे हैं।

एकमात्र हिन्दू धर्म जो है, अहिंसा परमो धर्मः की बात करता है। केवल हिन्दू ही करता है। हिन्दू ही मानव मात्र के कल्याण की बात करता है। विश्व शांति की बात करता है। विश्व शांति की बात और भी करते हैं, हाइड्रोजन बम से करते हैं। हम उस डर से नहीं करते हैं। हम अपने विकास की बात करते हैं।

इसलिए विश्व के लोग ज्यादा आकर्षित हो रहे हैं। वेस्ट से भी डेली कई लेटर आते जाते रहते हैं। अब ये रोग क्यों खत्म हो रहे हैं? उनको बड़े असमंजस की बात लग रही है। बड़ी दुविधा में फँसे हुए हैं कि धर्म ही रोग का नाश करेगा तो ये विज्ञान क्या करेगा? वास्तव में धर्म क्या है? लोग समझते ही नहीं। हमारी संस्कृति और पश्चिम की संस्कृति में दिन-रात का अंतर है। हमारी भाषा जितनी परिष्कृत है, पश्चिम में उसके लिए उचित शब्द नहीं है। अब धर्म को उन्होंने रिलीजन कह दिया। रिलीजन तो बदल देते हैं, धर्म को बदल ही नहीं सकते, वो तो धारण करने की चीज है। बदल रहे हैं, धन के लालच में। मगर धर्म तो बदला ही नहीं जा सकता है, रिलीजन बदला जा सकता है। आज जो यहाँ हो रहा है, कोई साधारण घटना नहीं हो रही, ये इस दर्शन का अंतिम और पूर्ण विकास है, वैदिक दर्शन का । अब रोग खत्म हो रहे हैं इसीलिए संसार बड़ा आकर्षित हो रहा है। ये बात भी सही है कि मेरे पास इस देश से 90 प्रतिशत लोग रोग ठीक कराने के लिए ही आते हैं।

www.the-comforter.org

मैं आपको बताऊँ कि योग क्या है ? रोग क्या है ? योग के बारे में बड़ी भ्रांतियाँ हैं, पूरी दुनिया में। आज योग का कहीं वर्णन आएगा तो आपके दिमाग में एक ही बात आएगी, कोई रोग है इसको शारीरिक कसरत करवाई जाएगी। जबकि योग का संबंध रोग से है ही नहीं। इस वक्त का पतंजलि योग दर्शन प्रामाणिक ग्रंथ है। उसको उठाकर देख लो। 195 सूत्र में कहीं भी रोग का वर्णन नहीं है। हमारा दर्शन तो मोक्ष की बात करता है। और मोक्ष आज कल्पना की चीज है। रोग क्यों खत्म हो रहे हैं, उसको खत्म करने में दोनों डॉक्टर सहयोगी हैं। एक बाहर का डॉक्टर जो कर रहा है। मगर आज बहुत सी बीमारियाँ ऐसी है जो असाध्य हैं। कैंसर, एड्स, गठिया, अस्थमा, डायबिटीज। सैकड़ों प्रकार की बीमारियाँ असाध्य हैं, और हमारा योग इसे ठीक कर देता है तो अंदर वाले डॉक्टर को प्लस करके ठीक होता है। आपके अंदर एक डॉक्टर बैठा है। मैं रोगियों को कह देता हूँ, भाई बाहर वाले डॉक्टर को छोड़ना नहीं, मगर तेरे अंदर एक डॉक्टर और बैठा है, मैं तो उससे परिचय करवा दूँगा। बाहर वाला प्लस अंदर वाला डॉक्टर, सारे रोग खत्म कर देंगे, और हो रहे हैं। कैंसर हो रहा है, एड्स हो रहा है। मतलब जिस एड्स से सारा विश्व आतंकित है, मैं मेरे 10 साल के अनुभव से इस नतीजे पर पहुँचा हूँ कि जितना एड्स का इलाज आसान है उतना कैंसर का नहीं। कैंसर से डरते नहीं, जिस बदकिस्मत के होता है वही मरता है, मगर एड्स फैलने वाली बीमारी है, छूत की बीमारी है। इसीलिए पूरा विश्व आतंकित है। मैंने जब शुरू किया, पहले ये बीमारी क्यों ठीक होती है, मैं नहीं बोलता था, जानता था, मगर समय नहीं आया था। अब 4-5 साल पहले मैं बीकानेर से आ रहा था तो कैंसर विशेषज्ञ एक डॉक्टर आर.के.चौधरी मुझे मिले, जो आजकल अजमेर में मेडीकल सुपरिन्डेंट है।

www.the-comforter.org

एक डॉक्टर मुझे see off करने आए थे डॉक्टर ओझा, मेरे शिष्य हैं बीकानेर मेडिकल कॉलेज में लगे हुए हैं। उन्होंने पूछा क्यों आए हो, उन्होंने कहा गुरुजी को सी ऑफ करने आया हूँ। सामान्यतः मुझे सारे डॉक्टर जानते हैं। क्योंकि अभी जो समस्याएँ हैं, उनका समाधान हो रहा है, इस योग से, जिसे वो इनक्योरेबल कह रहे हैं, क्योर हो रहा है। अभी तो मेरी भाषा नहीं समझते हैं।

मुम्बई गए तो एक डॉक्टर ने मुझसे कहा, गुरुजी आप क्या कर रहे हो, वो हमारी समझ में नहीं आ रहा है, आपका कोई डॉक्टर शिष्य हो तो बात कराइए।

मैंने कहा बीबीसी से मैंने 8-10 साल पहले एक न्यूज सुनी थी, मनुष्य के शरीर में कुछ ऐसे तत्त्व पैदा हो जाते हैं। ऐसे विजातीय तत्त्व जो उसके टिस्यूज को आत्महत्या करने के लिए प्रेरित करते हैं और टिस्यूज मरने लगते हैं, आदमी का शरीर गलने लगता है और आदमी मर जाता है। विज्ञान उसका बाल भी बांका नहीं कर सकती है। डॉक्टर बोले कि ये तो व्यावहारिक भाषा में है, हमारी मेडीकल भाषा में फर्क है बाकी कारण तो यही है। मैंने कहा अब हमारी वाली भाषा में सुन लो-

हमारे सिद्धान्त के अनुसार, योग के सिद्धान्त के अनुसार जो कुछ ब्रह्माण्ड में है, वो पिण्ड में है, जो पिण्ड में है, वही ब्रह्माण्ड में है। ये ही योग की भाषा है। जब पूरा ही ब्रह्माण्ड है, मनुष्य के अंदर तो फिर देवता भी अंदर है, और दानव भी अंदर। बाहर तो कुछ है ही नहीं। एक मनुष्य में किसी कारण से, पूर्व जन्म के संस्कार से, इस जन्म के कर्मों से, रोग हो गया जिसे आपने कैंसर कह दिया और वो इसीलिए हो गया कि उसके अंदर देव और दानव दोनों ही है। दानव ज्यादा प्रभावी हो गया, उसमें किसी कारण से, उसने आदमी को मारने की कोशिश शुरू कर दी। आप उसको कैंसर कह दो,

www.the-comforter.org

एड्स, हैपेटाइटिस बी कह दो, कुछ भी कह दो।

अब अगर उसी आदमी में किसी तरीके से किसी क्रिया से देवता चेतन हो जाए तो, वो तो दानव से ज्यादा प्रभावी है। तो डॉक्टर बोले फिर तो कैंसर ठीक हो जाएगा। मैंने कहा डॉक्टर साहब, आपका कैंसर क्योरेबल होना चाहिए। मगर जब तक नहीं होगा, दुनिया नहीं मानेगी, मैं क्यों कहूँगा, मैं पहले नहीं कहूँगा। उसके बाद मैंने बोलना शुरू कर दिया कि कैंसर और एड्स क्यों ठीक होता है? और है क्या वास्तव में। और बहुत जने ठीक हो गए।

मेरा उद्देश्य सिर्फ इतना ही है कि जिसे आप सिद्धयोग कहते हैं, उसके लिए कोई बीमारी असाध्य नहीं है। और अब मैं एक ही चीज को सिद्ध करना चाहता हूँ, मेरा एक ही उद्देश्य है कि Aids is a curable disease. (एड्स इज ए क्योरेबल डिजीज) अर्थात् एड्स का इलाज संभव है।

एक आवे, हजार आवे, लाख आवे, मगर ठीक होने के लिए कहीं रूकावट आएगी तो वो साधक की आस्था है। "अगर आपको गुरु में विश्वास ही नहीं है तो फिर मामला गड़बड़ है। अगर आप रोग ही ठीक करवाने आए हो और मुझसे कोई लेना-देना नहीं है तो भाई सिरदर्द भी ठीक नहीं होगा, और नहीं तो एड्स और कैंसर कोई समस्या ही नहीं है।" भारतीय योगदर्शन के हिसाब से, क्योंकि भारतीय योगदर्शन तो मोक्ष की स्थिति में पहुँचा देता है, और मोक्ष तो वह स्थिति है जो मनुष्य का उच्चतम विकास करती है, उससे आगे फिर विकास की गुंजाइस ही नहीं है, मनुष्य में। तो अब ये शुरू हो गया।

पश्चिम (वेस्ट) आएगा, इसी जगह आएगा, और लाखों की संख्या में आएगा, मगर एड्स के डरसे, भगवान के डर से नहीं।

क्रमशः अगले अंक में...

www.the-comforter.org

आध्यात्मिक पथप्रदर्शक-गुरु

इस शक्ति की प्राप्ति तो एक आत्मा , एक दूसरी आत्मा से ही कर सकती है- अन्य किसी से नहीं। हम भले ही सारा जीवन पुस्तकों का अध्ययन करते रहें और बड़े बौद्धिक हो जाएँ, पर अंत में हम देखेंगे की हमारी तनिक भी उन्नति नहीं हुई है। यह बात सत्य नहीं कि उच्च स्तर के बौद्धिक विकास के साथ-साथ मनुष्य के आध्यात्मिक पक्ष की भी उतनी ही उन्नति होगी।

-यद्यपि लगभग हम सब आध्यात्मिक विषयों पर बड़ी पाण्डित्यपूर्ण बातें कर सकते हैं, पर जब उन बातों को कार्यरूप में परिणित करने का यथार्थ आध्यात्मिक जीवन बिताने का अवसर आता है तो हम अपने को सर्वथा अयोग्य पाते हैं। जीवात्मा की शक्ति को जाग्रत करने के लिए किसी दूसरी आत्मा से ही शक्ति का संचार होना चाहिए।

-जिस व्यक्ति की आत्मा से दूसरी आत्मा में शक्ति का संचार होता है, वह गुरु कहलाता है और जिसकी आत्मा में यह शक्ति संचारित होती है, उसे शिष्य कहते हैं।

-यथार्थ धर्म गुरु में अपूर्व योग्यता होनी चाहिए और उसके शिष्य को भी कुशल होना चाहिए। जब दोनों ही अद्भुत और असाधारण होते हैं,तभी अद्भुत आध्यात्मिक जागृति होती है, अन्यथा नहीं।

-तीर्णाः स्वयं भीमभवार्णनं जनाः अहेतुनान्यानपि तारयन्त। ये इस भीषण भवसागर में उस पार स्वयं भी

www.the-comforter.org

चले गए और बिना किसी लाभ की आशा किए दूसरों को भी पार करते हैं ।ऐस ही मनुष्य गुरु हैं, और ध्यान रखो, दूसरा कोई गुरु नहीं कहा जा सकता।

–प्रकृति का यह एक महत्त्वपूर्ण नियम है कि खेत तैयार होते ही बीज मिलता है।ज्योंही आत्मा को धर्म की आवश्यकता होती है, त्योंही धार्मिक शक्ति देने वाला कोई न कोई आना ही चाहिए। खोज करने वाले की भेंट, खोज करने वाले उद्धारक से ही हो जाती है। जब ग्रहण करने वाली आत्मा की आकर्षण शक्ति पूर्ण और परिपक्व हो जाती है, उस समय उस आकर्षण का उत्तर देने वाली शक्ति आनी ही चाहिए।

– सच्चे गुरु वे ही हैं, जिनके द्वारा हमको अपना आध्यात्मिक जन्म प्राप्त होता है। वे ही वह साधन है, जिसमें से होकर आध्यात्मिक प्रवाह हम लोगों में प्रवाहित होता है। वे ही समग्र आध्यात्मिक जगत् के साथ हम लोगों के संयोग सूत्र हैं। व्यक्ति विशेष के ऊपर अतिरिक्त विश्वास करने से दुर्बलता और अन्तः सारशून्य बहिः पूजा आ सकती है, किन्तु गुरु के प्रति प्रबल अनुराग से उन्नति अत्यन्त शीघ्र संभव है। वे हमारे अन्तः स्थित गुरु के साथ हमारा संयोग करा देते हैं। यदि तुम्हारे गुरु के भीतर यथार्थ सत्य है तो उनकी आराधना करो, यही गुरुभक्ति तुम्हें शीघ्र ही चरम अवस्था में पहुँचा देगी।

–यदि किसी एक भी जीव में ब्रह्म का विकास हो गया तो, सहस्रों मनुष्य उसी ज्योति के मार्ग से आगे बढ़ते हैं। ब्रह्मज्ञ पुरुष ही लोक गुरु बन सकते हैं; यह बात शास्त्र और युक्ति दोनों से ही प्रमाणित होती है।स्वार्थ युक्त ब्राह्मणों ने जिस कुलगुरु प्रथा का प्रचार किया, वह वेद और शास्त्रों के विरूद्ध है। इसीलिए साधना करने पर भी लोग अब सिद्ध या ब्रह्मज्ञ नहीं होते हैं। फिर शक्ति संचारक गुरु के संबंध में तो और भी बड़े खतरों की संभावना है। बहुत से लोग ऐसे हैं, जो स्वयं तो बड़े अज्ञानी है, परन्तु फिर भी अंहकारवश अपने को

www.the-comforter.org

सर्वज्ञ समझते हैं, इतना ही नहीं, बल्कि दूसरों को भी अपने कंधों पर ले जाने को तैयार रहते हैं। इस प्रकार अँधा अँधे का अगुआ बन जाता है, फलतः दोनों ही गड्ढे में गिर पड़ते हैं। संसार ऐसे ही लोगों से भरा पड़ा है। हर एक आदमी गुरु होना चाहता है। एक भिखारी भी चाहता है, वह लाखों का दान कर डाले। जैसे हास्यास्पद ये भिखारी हैं, वैसे ही ये गुरु भी।

–आध्यात्मिक गुरु के द्वारा संप्रेषित जो ज्ञान आत्मा को प्राप्त होता है, उससे उच्चतर एवं पवित्र वस्तु और कुछ नहीं है। यदि मनुष्य पूर्णयोगी हो चुका है तो वह स्वतः ही उसे प्राप्त हो जाता है। किन्तु पुस्तकों द्वारा उसे प्राप्त नहीं किया जा सकता। तुम दुनिया के चारों कोनों में– हिमालय, ऐल्प्स, काकेकश पर्वत अथवा गोबी या सहारा की मरुभूमि या समुद्र की तली में जाकर अपना सिर पटकों, पर बिना गुरु मिले तुम्हें वह ज्ञान प्राप्त नहीं हो सकता।

–भगवान की कृपा अथवा उनकी योग्यतम् संतान महापुरुषों की कृपा प्राप्त कर लो। ये ही दो भगवत्प्राप्ति के प्रधान उपाय हैं। ऐसे महापुरुषों का संग लाभ होना बहुत ही कठिन है, पाँच मिनट भी उनका ठीक-ठीक संग लाभ हो जाए तो सारा जीवन ही बदल जाता है। यदि तुम इन महापुरुषों की संगति के सचमुच इच्छुक हो तो तुम्हें किसी न किसी महापुरुष का संग लाभ अवश्य होगा। ये भक्त, ये महापुरुष जहाँ रहते हैं, वह स्थान पवित्र हो जाता है। ''प्रभु की संतानों का ऐसा ही माहात्म्य है। वे स्वयं प्रभु हैं, वे जो कहते हैं, वही शास्त्र हो जाता है, ऐसा है उनका माहात्म्य।

वे जिस स्थान पर निवास करते हैं, वह उनके देह निःसृत पवित्र शक्ति-स्पन्दन से परिपूर्ण हो जाता है; जो कोई उस स्थान पर जाता है, वही उसी स्पंदन का अनुभव करता है। और इसी कारण उसके भीतर भी पवित्र बनने की प्रवृत्ति जाग उठती है।''

–स्वामी विवेकानन्द

◆◆◆

www.the-comforter.org

बिल्ली रूपी वासना

सहसा एक बिल्ली दूसरी बिल्ली का पीछा करती हुई पास से निकल गई। दोनों बिल्लियाँ छत पर चढ़ गई। एक बिल्ली ने दूसरी को मार दिया। उसकी लाश लुढ़कती हुई छत से नीचे आ गिरी।

आज संसार ही बिल्ली की मनोवृत्ति से ग्रसित है। कोई मारने के लिए भाग रहा है तो कोई जान बचाने के लिए। मारने वाले के मन में हिंसा का साम्राज्य है तो जान बचाने वाले के मन में भय व्याप्त है। जो आज सबको मारता फिरता है, वह अधिक बलशाली के सामने आ जाने पर भीगी बिल्ली बन जाता है। जो कभी जान बचाता भाग रहा था, वह विकराल रूप धारण कर दूसरों को पीटने लगता है। जिससे आज हम डरते हैं, समय आने पर उसे आँखें दिखाने लगते हैं। जिस प्रकार बिल्ली खाद्य पदार्थ पर ताक लगाए रहती है, उसी प्रकार मनुष्य भी जहाँ अवसर पाता है, उचित अनुचित का विचार किए बिना झपट पड़ता है। मनुष्य का स्वभाव पूर्णतया बिल्ली की तरह हो गया है। स्वार्थ, क्रोध, घात लगाना, परस्पर वैमनस्य , हिंसा आदि सभी पशु वृत्तियाँ।

मानव के अंदर की बिल्ली संभवतः बाहरी बिल्ली से भी अधिक आक्रामक तथा घातक है। चंचल इतनी कि अपने साथ मनुष्य के अंग-अंग को चंचल बना देती है। विषयों की भूख ऐसी प्रबल है कि पेट भरने में ही नहीं आता। मनुष्य बाहर की बिल्ली को देखकर घृणा करता है, किन्तु अंदर की बिल्ली का सेवक बना, प्रत्येक आज्ञा का पालन करता है। अन्तर में बिल्ली वासना का रूप धरे आसन जमाऐ बैठी है। वासना चित्त में उदय होती है, बिल्ली की तरह दबे पाँव मन में प्रवेश कर जाती है तथा जगत् के विषयों पर

www.the-comforter.org

एकदम झपट पड़ती है। विषयों के पीछे मन पगला हो जाता है। मन की यह स्थिति जन्म-जन्मान्तरों से चली आ रही है। वासना रूपी बिल्ली ने उठाया, गिराया, पटकाया, फिर उठाया फिर गिराया।

हृदय के भाव वासना रूपी बिल्ली से प्रभावित होते हैं। संसार एक ऐसे जंगल के समान बन गया है जिसमें सर्वत्र बिल्लियाँ ही घूमती फिरती हैं। यदि एक बिल्ली मरती है तो दो नई जन्म ले लेती हैं। दूल्हे के रूप में बिल्ली ही घोड़े पर बैठती है, दुल्हन के रूप में सजती है, संवरती है, बिल्ली ही संतान के रूप में जन्म लेती है। कला, विज्ञान, खेल या व्यापार सब ओर बिल्लियों की ही धूम है। ऐसा लगता है मानो आंतरिक बिल्ली ने काल पर विजय पा ली है। लोग जन्मते-मरते हैं पर बिल्ली सदैव बनी रहती है जैसे उसने अमरत्व प्राप्त कर लिया हो। न बूढ़ी होती है, न व्याधिग्रस्त। हर समय युवा, तरोताजा, झपट पड़ने के लिए तैयार। स्त्री, पुरुष, अमीर-गरीब, किसी भी संप्रदाय का अनुयायी, कलाकार, विद्वान अथवा पहलवान हो, बिल्ली प्रत्येक के मन में प्रभावी है।

आंतरिक बिल्ली देश की सीमाओं से भी मुक्त है। बिल्ली उस मनुष्य के साथ ही बिना पासपोर्ट व वीजा के प्रवेश कर जाती है। बिना टिकट ही ट्रेन, हवाई जहाज या बस में यात्रा करती है। कोई घर में हो या बाहर, एकान्त में हो या जन समूह में वह कहीं भी मनुष्य का साथ नहीं छोड़ती।

वासना रूपी बिल्ली ही रावण है। भगवान् श्रीराम ने रावण का वध कर दिया, किन्तु वासना रूपी बिल्ली के रूप में रावण आज भी संसार पर राज कर रहा है। रावण केवल लंका पर राज्य करता था पर आज सारा संसार ही लंका बना हुआ है। हमारे अन्तर में वास्तव में ही शुभ वासना तथा अशुभ वासना के रूप में दो बिल्लियाँ हैं। इन्हीं को देव तथा असुर वासनाएँ कहा जाता है। मन

www.the-comforter.org

पर अशुभ वासना का ही आधिपत्य है। हर पल उसके उपद्रव घटित होते रहते हैं। उसे मारने के लिए शुभ वासना रूपी बिल्ली को खिला-पिलाकर हृष्ट-पुष्ट करना होगा, जिसके लिए शुभ कर्मानुष्ठान की आवश्यकता है,ताकि अन्तर में शुभ संस्कार संचित होकर शुभ वासना उदय हो सके तथा अशुभ वासना रूपी बिल्ली का संहार कर सके। जब अशुभ वासना समाप्त हो जाती है तथा केवल शुभ वासना ही शेष रह जाती है तो वह अपने आप मर जाती है।

शुभ कर्म, सद्गुरु कृपा तथा उनमें समर्पण ही वह मार्ग है जिस पर चलते हुए वासना रूपी बिल्ली पर विजय प्राप्त की जा सकती है। इस घोर कलियुग में परम श्रद्धेय सद्गुरुदेव कृपालु भगवान् श्री रामलाल जी सियाग से सिद्धयोग की दीक्षा पाकर कोई व्यक्ति चाहे किसी जाति, धर्म, वर्ण, संप्रदाय का हो, सच्ची निष्ठा व पूर्ण समर्पण से गुरुप्रदत्त नाम जप व

www.the-comforter.org

ध्यान करता है तो वह तीनों प्रकार के क्लेशों (आधिभौतिक, आधिदैहिक व आधिदैविक) से पूर्णतः मुक्त होता चला जाता है। वह अध्यात्म की ओर भी खिंचा चला जाता है। जीवन में आनन्द ही आनन्द ।

ऐसे परम कृपालु, दयालु श्री सद्गुरुदेव के श्री चरणों में कोटि-कोटि नमन व साष्टांग दण्डवत प्रणाम करता हूँ।

◆◆◆

कहानी

गुरुसेवा और आज्ञापालन से ब्रह्मज्ञान

सामान्य ज्ञान की बात ही क्या, ब्रह्मज्ञान भी गुरुवचनों के प्रति आदर सम्मान और श्रद्धापूर्वक उनके पालन करने से प्राप्त हो सकता है जिसके अप्रतिम उदाहरण उपनिषदों में हैं। यहाँ एक आख्यान प्रस्तुत किया जा रहा है।

जबाला नाम की ब्राह्मणी थी। उसके सत्यकाम नाम का एक पुत्र था। जब वह विद्याध्ययन करने योग्य हुआ, तब एक दिन उसने गुरुकुल जाने की इच्छा से अपनी माता से पूछा – माता मैं ब्रह्मचर्य पालन करता हुआ गुरु की सेवा में रहना चाहता हूँ। गुरु मुझसे नाम और गोत्र पूछेंगे, मैं अपना नाम तो जानता हूँ परन्तु गोत्र नहीं जानता, अतएव मेरा गोत्र क्या है, वह बतला दो।

जबाला ने कहा– बेटा तू किस गोत्र का है, इस बात को मैं नहीं जानती। मेरा नाम जबाला है और तेरा नाम सत्यकाम। तुझसे आचार्य पूछें तो कह देना कि मैं जबाला का पुत्र सत्यकाम हूँ।''

माता की आज्ञा लेकर सत्यकाम, गौतम ऋषि के आश्रम में गया और प्रार्थना करके उनसे बोला–भगवन् मैं ब्रह्मचर्य का पालन करता हुआ आपके समीप रह कर सेवा करना चाहता हूँ, मुझे स्वीकार कीजिए।

गुरु ने बड़े स्नेह से पूछा– सौम्य ! तेरा गौत्र क्या है। सत्यकाम ने नम्रता से कहा– भगवन् ! मैं इस बात को नहीं जानता, मैं इतना ही जानता हूँ कि मेरा नाम सत्यकाम और मेरी माता का नाम जबाला है।

सत्यवादी सरल हृदय सत्यकाम की सीधी सच्ची बात सुनकर ऋषि गौतम प्रसन्न होकर बोले – वत्स ! ब्राह्मण को छोड़ कर दूसरा कोई भी इस प्रकार सरल भाव से सच्ची बात नहीं कह सकता। तू निश्चय ही ब्राह्मण है। मैं तेरा उपनयन संस्कार करूँगा, जा थोड़ी सी समिधा(लकड़ी)ले आ।

विधिवत उपनयन संस्कार करने के बाद ऋषि गौतम ने अपनी गौशाला से चार सौ दुबली–पतली गौएँ चुनकर

www.the-comforter.org

अधिकारी शिष्य सत्यकाम से कहा पुत्र !इन गौओं को चराने वन में ले जा। देख जब तक इनकी संख्या पूरी हजार न हो जाए,तब तक वापस न आना।

सत्यकाम गौओं को लेकर जिस वन में चारे पानी की बहुतायत थी, उसी में चला गया और वहीं कुटिया बनाकर वर्षों तक तन मन से उन गौओं की सेवा करता रहा ।

सेवा करते-करते गौओं की संख्या पूरी एक हजार हो गई। तब एक दिन एक वृषभ ने आकर पुकारा- सत्यकाम। सत्यकाम ने उत्तर दिया भगवन् क्या आज्ञा है। वृषभ ने कहा- वत्स हमारी संख्या एक हजार हो गई है, अब हमें गुरु के आश्रम ले चलो। मैं तुम्हें ब्रह्म के एक पाद का उपदेश करता हूँ। सत्यकाम ने कहा- कहिए भगवन्। इसके बाद वृषभ ने ब्रह्म के पाद का उपदेश देकर कहा- इसका नाम 'प्रकाशवान्' है। अगला उपदेश तुम्हें अग्निदेव करेंगे।

दूसरे दिन प्रातः सत्यकाम गौओं को हाँककर आगे चला। सन्ध्या के समय मार्ग में पड़ाव डालकर उसने गौओं को वहाँ रोका और उन्हें जल पिलाकर रात्रि निवास की व्यवस्था की। तदनन्तर वन से लकड़ियाँ बटोर कर अग्नि जलाकर पूर्वाभिमुख होकर बैठ गया। अग्निदेव ने उसे संबोधन किया- सत्यकाम ! मैं तुम्हें ब्रह्म के दूसरे पाद का उपदेश करता हूँ ऐसा करने के बाद कहा- इसका नाम 'अनन्तवान' है। अगला उपदेश तुम्हें हंस करेगा।

सत्यकाम प्रातकाल गौओं को हाँककर आगे बढ़ा और सन्ध्या होने पर किसी सुन्दर जलाशय के किनारे ठहर गया। गौओं के लिए रात्रि निवास की व्यवस्था की और स्वयं आग जलाकर पूर्वाभिमुख होकर बैठ गया। इतने में एक हंस ऊपर से उड़ता हुआ आया और

www.the-comforter.org

सत्यकाम के पास बैठकर बोला- सत्यकाम मैं तुम्हें ब्रह्म के तीसरे पाद का उपदेश करके कहा इसका नाम ''ज्योतिष्मान्'' है। अगला उपदेश तुम्हें मद्गु नाम का एक पक्षी करेगा।

प्रातःकाल गौओं को हाँककर आगे बढ़ा और संध्या समय एक वट वृक्ष के नीचे ठहर गया। गौओं की उचित व्यवस्था करके वह अग्नि जलाकर पूर्वाभिमुख होकर बैठ गया।

इतने में मद्गु नामक जलपक्षी ने आकर पुकारा- सत्यकाम ! सत्यकाम ने उत्तर दिया भगवन् क्या आज्ञा है ? मद्गु ने कहा वत्स ! मैं तुम्हें ब्रह्म के चतुर्थपाद का उपदेश करता हूँ। सत्यकाम बोला- प्रभो ! कीजिए तदनन्तर उसने 'आयतनवान' रूप से ब्रह्म का उपदेश दिया।

इस प्रकार सत्यकाम गुरुसेवा और गौसेवा के प्रताप से वृषभरूप वायु, अग्निदेव, हंसरूप सूर्यदेव और मद्गुरूप प्राणदेवता से ब्रह्मज्ञान प्राप्तकर सत्यकाम एक हजार गायों को लेकर गौतम ऋषि के आश्रम में पहुँचा। गुरु बोले- सौम्य ! तू ब्रह्मज्ञानी के सदृश दिखाई दे रहा है, वत्स तुझे किसने उपदेश दिया। सत्यकाम ने सारी घटना सुना दी और कहा भगवन् ! मैंने सुना है आप सदृश आचार्य के द्वारा प्राप्त की हुई विद्या ही श्रेष्ठ होती है। अतः आप मुझे उपदेश कीजिए। गुरु प्रसन्न हो गए और उन्होंने कहा वत्स तूने जो कुछ प्राप्त किया है, वही ब्रह्मतत्त्व है। अब तेरे लिए कुछ भी जानना शेष नहीं रहा।

इस प्रकार अपनी कर्तव्य निष्ठा में तत्पर सत्यकाम गायें चराकर गुरुसेवा और आज्ञापालन मात्र से ही ब्रह्मज्ञानी हो गए।

वर्तमान में समर्थ सद्गुरुदेव श्री रामलालजी सियाग ही त्रिकालदर्शी, समर्थ, कल्कि अवतार और ब्रह्मज्ञानी हैं। इनकी कृपा से ही व्यक्ति समस्त संतापों से मुक्त होकर सत् चित व आनंद की ओर उन्मुख हो जाता है।

सब तीरथ गुरु चरण में,
भटके क्यूं जग मांय।
चैन मिले मन स्थिर रहे
आत्मजोत जगाय।।

◆◆◆

www.the-comforter.org

साधना विषयक बातें

गतांक से आगे...

योगमार्ग पर आराधनाशील साधक को विभिन्न प्रकार के पहलुओं का सामना करना होता है। कभी उतार, कभी चढ़ाव, मानसिक उद्वेग, कभी हँसी-खुशी, कभी बेबसी, उदासीनता, काम, क्रोध और न जाने इस योग मार्ग की यात्रा में कितने ही पड़ाव और हर मोड़ पर चौराहा और थोड़ी देर बाद दूसरे मोड़ पर फिर चौराहे आते हैं, जिससे साधक दिग्भ्रमित हो जाता है यदि उस पर सद्गुरुदेव की असीम कृपा बराबर न बनी रहे तो।

मानव से अतिमानत्व की यात्रा में, दिव्य रूपान्तरण के लिए सफलता तभी संभव है जब साधक अपने सद्गुरु के बताए पथ पर निष्कपट भाव से, गाढ़ी प्रीति रखते हुए पूर्ण समर्पण भाव से आराधना करें। श्री रामकृष्ण परमहंस, स्वामी विवेकानन्द, महर्षि श्री अरविन्द घोष, श्रीमां सहित कई प्राचीन योगियों के समय, उनके शिष्यों से उनका जो वार्तालाप हुआ है, उसको समय समय पर इस शीर्षक के अंतर्गत देंगे जिससे आराधनाशील साधकों को इस मार्ग में सहायता मिल सके।

---

www.the-comforter.org

शक्ति (गुरु) की सहायता तो तुम्हारे पास है ही। अपने को खुला रखने से तुम्हारे भीतर उनका काम फलीभूत होगा।

यही तो चाहिये-यदि बाधा आयेगी और वह तुम्हें डिगा न पाये तब तो चेतना की दृढ़ प्रतिष्ठा हो रही है-जैसे भीतर वैसे ही बाहरी प्रकृति में भी।

क्लांति का बोध होना शरीर चेतना का, तमोगुण का प्रधान लक्षण है जब शरीर चेतना यह सोचती है कि "मैं काम कर रही हूँ" तब ऐसा क्लांति-बोध होता है। आजकल आश्रम में शरीर-चेतना में इस तमोगुण का खूब खेल हो रहा है, एक की चेतना से दूसरे की चेतना में इसका प्रसार हो रहा है।

"श्रीमां आज गुरु-गंभीर थीं।

मुझसे असंतुष्ट हैं। मैं योग के अयोग्य हूँ, मेरा कुछ नहीं होने का", ऐसे ख्यालों से आश्रम के अनेक साधक विरोधी शक्ति के आक्रमण को अपने भीतर प्रवेश करने देते हैं, यंत्रणा भोगते हैं, यहाँ तक कि चरम विपदा में गिरने की तैयारी करते हैं। तुम उनकी तरह मत करो। जब ऐसे विचार आयें तब उन्हें दूर ठेल दो। Confidence in the Mother (शक्ति पर विश्वास) है इस योग का प्रधान अवलम्ब। यह विश्वास कभी नहीं खोना चाहिये।

निःसंदेह वाक-संयम साधना के पथ में बहुत उपकारी हैं। अनावश्यक बात बोलने से शक्ति का क्षय होता है और बहुत आसानी से निम्न चेतना में गिर पड़ते हैं।

बहिर्मन की बाधा को अतिक्रम करने में समय लगता है क्योंकि उसकी जड़ स्वभाव की मिट्टी में बड़ी गहरी और दृढ़ता से रोपी हुई होती है। इस बाधा से विचलित होना ठीक नहीं, इस stage (अवस्था) में वह स्वाभाविक है। उसे पूरी तरह निर्मल करने के लिये patience (धैर्य) और perseverence (अध्यवसाय) चाहिये।

तुम्हें कहा है कि कुछ बाधाएँ ऊपरी सतह पर रहेंगी, भीतर शांत-स्थिर रहने से वे भीतर नहीं घुस सकेंगी-साधना करते-करते वे ऊपरी बाधाएँ भी धीरे-धीरे लुप्त हो जायेंगी-ये सब प्रायः आनन-फानन में नहीं चली जातीं।

प्रश्नः- जैसे ध्यान में शांति और प्रकाश अनुभव करती हूँ, जाग्रतावस्था में भी जैसे वही अनुभव करती हूँ। तुम क्या अभी पुनः मेरे अंदर उतर आयी हो? लगता है तुम्हारे चरण-युगल मेरे भीतर उतर आये हैं और वहाँ विराजमान हैं।

उत्तरः- It is very good (यह बहत अच्छा है)। सब अंदर ही निहित था, कुछ भी खोया नहीं था-देख ही रही हो कि सब कुछ लौट रहा है।

प्रश्नः- कल जो मैं सारा दिन रोती

www.the-comforter.org

रही, वह इसलिये कि क्यों मैं तुम्हारे साथ युक्त नहीं, क्यों मैं pure open (खुली) नहीं। आज वह मनस्ताप नहीं है। आज मैं तुम्हें हर समय, हर चीज में feel (अनुभव) कर रही हूँ और तुम मानों धीरे-धीरे मेरी ओर बढ़ती आ रही हो और अपने शांति और आलोक से भर मुझे उठा रही हो।

उत्तरः- यह सब अच्छा ही है। अभी तक जो हर समय और संपूर्ण रूप से नहीं होता तो इसमें कोई आश्चर्य करने की, दुःखी होने की कोई बात नहीं। साधना में इतनी जल्दी और इतनी दूर तक जो प्रगति हुई है वही आश्चर्यजनक और सुखद है।

प्रश्नः- आज प्रणाम करने के समय मेरे भीतर तुमसे कुछ पाने के लिये लालायित था। किस कारण से मेरे भीतर ऐसा हुआ? क्यों मैं प्रफुल्ल अंतर से, मुक्तभाव से सब कुछ तुम्हारे श्रीचरणों में अर्पित नहीं कर सकी ?

श्रीमां को संबोधन करके लिखे गये साधकों के अनेक पत्रों के उत्तर श्रीअरविन्द दिया करते थे।

उत्तरः- लगता है पुराने अभ्यासवश कुछ पाने की चाह मन में उठी थी। कामना दुःख की जननी है। जरा सजग हो प्रत्याख्यान करने से चली जायेगी।

प्रश्नः- लगता है शक्ति को सर्वत्र और सर्वदा देख पा रही हूँ और आँखें सजल हो उठती है। ये आंसू तो निजी दुःख के आंसू नहीं। फिर ये किसलिये ?

उत्तरः- आंसू जब दुःख के नहीं हैं तो प्रेम-भक्ति के ही आंसू होंगे।

प्रश्नः- तुमने अपने शिशु को और शिशु के सारे भार को ओढ़ लिया है और तुम्हारे और मेरे बीच कोई भेद नहीं रहा। चलचित्र की तरह, काल्पनिक वस्तु की तरह मैं यह सब क्या देख रही हैं ?

उत्तरः- यह अवस्था अच्छी ही है। जब भेद नहीं रहा तो उसका मतलब है कि भीतरी चेतना श्रीमां के साथ मिल गयी है, इसीलिये ऐसा अनुभव हो रहा है।

www.the-comforter.org

प्रश्नः- हृदय में तुम्हारे आसन के दोनों ओर काफी ऊंचाई से दो सीढ़ियाँ उतर रही हैं, एक रूपहली दूसरी सुनहली। छोटी बालिका की न्याई इस सीढ़ी से बहुत-सी शक्ति उतर रही है, उसका रूप, परिधान और प्रकाश दो तरह का था-शुभ्र धवल और उज्ज्वल सूर्य की तरह।

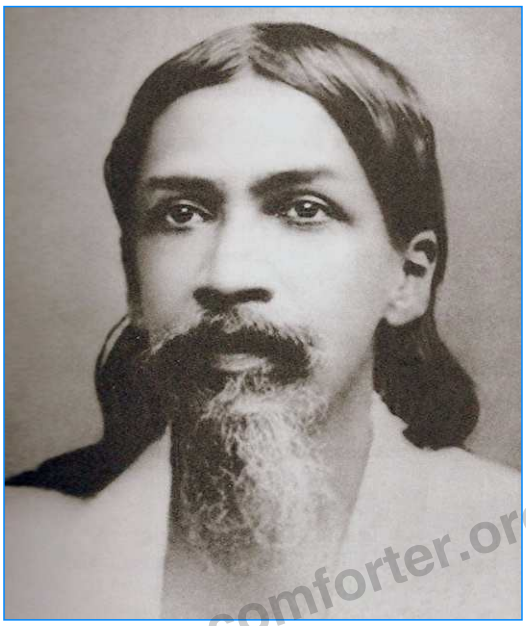

उत्तरः- आध्यात्मिकता का पथ और आध्यात्मिक शक्ति और ऊर्ध्व सत्य का पथ और उस सत्य की शक्ति।

प्रश्नः- कभी-कभी ऐसा महसूस करती हूँ कि काफी ऊँचाई से कोई मधुर भाव से कह रहा है "आओ, आओ, सब कुछ छोड़ समर्पण कर ऊपर उठ आओ।" और इस वाणी को सुनने के साथ-साथ खूब उज्ज्वल नीला प्रकाश भी पाती हूँ। श्रीमां, मुझे कौन बुला रहे हैं ?

उत्तरः- एक दिन ऊपर, मन से ऊपर उठना होगा। ऊपर की शांति और शक्ति को नीचे उतारना और ऊपर आरोहण कर, मन के ऊपर रहना-ये दोनों योग के आवश्यक अंग हैं।

प्रश्नः- आज मेरे साथ किसी का कुछ संबंध नहीं, मैं मानो सब कुछ से मुक्त हो, गंभीर शांति और मातृमयी चेतना में डूबी हुई हूँ। आज दो बार दो खाराब शक्तियों को देखा था, तब समझ लिया था कि वे मेरी पुरानी चेतना और अंधकार के रास्ते, मेरे अंदर प्रवेश करना चाहती हैं। किंतु मैं अचंचल बनी रही और उन सब की तुम्हारी श्रीचरणों में बलि चढ़ा दी।

उत्तरः- It is very good (अति उत्तम)। खराब शक्ति या अवस्था के आना चाहते ही, इसी तरह शांत और सचेतन मन से शक्ति को पुकारने से

www.the-comforter.org

वह चली जायेगी।

प्रश्नः- तुम मानो अब अपने शिशु के मस्तक में हो। पहले तुम्हें हृदय में महसूस करती और देखती थी, अब क्यों मस्तक में देखती हूँ?

उत्तरः- लगता है श्रीमां तुम्हारे मन को विशेष रूप से ऊर्ध्व चेतना की ओर खोलना चाहती हैं इसीलिये उन्होंने मस्तक में अपना आसन जमाया है।

प्रश्नः- अब देखती हूँ कि मेरे गले में किसी ने सफेद कमल की माला पहना दी है। मुझे इतना आनंद अनुभव क्यों हो रहा है, पता नहीं।

उत्तरः- यह बहुत अच्छा है। इसका अर्थ है physical mind (भौतिक मन) में श्रीमां की चेतना के प्रकाश की स्थापना।

प्रश्नः- एक साधिका ने स्वप्न में देखा कि श्रीमां उसका बड़ी कठोरता से तिरस्कार कर रही हैं। किंतु उस साधिका को विश्वास है कि कोई विरोधी शक्ति श्रीमां का रूप धरकर उसे विचलित और उद्विग्न कर रही है।

उत्तरः- ये सब झूठे सपने आते हैं प्राण की अवचेतना से-जाग्रत् अवस्था में उनका जोर नहीं चलता अतः नींद में अवचेतन अवस्था में मिथ्या रूप धर यदि विचलित कर सकें. अच्छी अवस्था को रौंद सकें-विरोधी शक्ति की यही चेष्टा रहती है। इस तरह के स्वप्न का विश्वास न करना, जागने पर झाड़ देना।

यह कामशक्ति की कठिनाई आश्रम में अधिकांश साधकों की प्रधान बाधा है। एकमात्र गुरु की शक्ति ही इससे पिंड छुड़ा सकती है-उस शक्ति के प्रति अपने को खुला रखो और समस्त मन-प्राण में उससे छुटकारे के लिये aspiration (अभीप्सा) जगाओ।

क्रमशः अगले अंक में...

www.the-comforter.org

'मोक्ष मूलं गुरु कृपा'

गुरु एवं शिष्य के पवित्र रिश्तों को जब किसी पर्व के रूप में मनाया जाता है तो वह गुरु पूर्णिमा पर्व कहलाता है। इस वर्ष यह पावन पर्व 24 जुलाई को मनाया जाएगा। गुरु पूर्णिमा महोत्सव गुरु शिष्य मिलन का सर्वोत्तम और पावन अमृतमयी वेला की शुभ घड़ी का दिन है। इस दिन महाभारत ग्रंथ के रचयिता श्री वेदव्यास जी ने अपने शिष्यों को अध्यात्मिक ज्ञान देने के लिए दीक्षा प्रदान की। उस दिन के बाद से यह पर्व प्रति वर्ष बड़ी श्रद्धा एवं समर्पण के साथ मनाया जाता है। गुरु के बिना मनुष्य जीवन अपूर्ण रह जाता है।

अंधकार का निरोध या अज्ञान का नाश करने वाला तेज रूप ब्रह्म ही गुरु है। ज्ञान का दाता गुरु होता है। जब व्यक्ति में सच्चा शिष्यत्व जन्म लेने लगता है, तब गुरु स्वयं आकर उसका दिशा निर्देश करता है। गुरुत्व उच्चतम एवं पवित्रतम तत्त्व है। इसकी अनुभूति विनम्र समर्पण से ही संभव है। स्थूल देह में आज्ञाचक्र गुरुत्व का प्रतिनिधित्व करता है। साधक को इस मायारूपी संसार से मुक्त होने के लिए पग पग पर मार्गदर्शन की आवश्यकता पड़ती है। उनके लिए प्रत्यक्ष गुरु का होना जरूरी है। इसलिए गुरु के भौतिक शरीर को भी स्वीकार किया जाता है।

गुरु बिन ज्ञान न उपजै,
गुरु बिन मिले न मोक्ष।
गुरु बिन लखै न सत्य को,
गुरु बिन मिटे न दोष।।

आज हिन्दू धर्म में प्रत्येक व्यक्ति ने अपना गुरु धारण कर रखा है परंतु गुरु बनाने से पूर्व एवं बाद के जीवन में कोई परिवर्तन नही दिखाई पड़ता है। कारण स्पष्ट है कि जिनको उन्होंने

www.the-comforter.org

अपना गुरु माना, उनके स्वयं के पास कोई गुरु पद नहीं था क्योंकि यह शक्ति तभी कार्य करती जब पिछला समर्थ गुरु अपना गुरु पद किसी सुयोग्य शिष्य को सौंप जाए, तब वह सारी शक्तियाँ उसमें बोलने लगती है परंतु इस कलियुग में तो भगवा धारण कर

हजारों गुरु बन बैठे हैं। गुरु ही शिष्य को ढूंढ़ता है , शिष्य में सामर्थ्य नहीं की वह गुरु को ढूंढ सके।

गुरु शिष्य परंपरा में शक्तिपात दीक्षा का विधान है। उसके अनुसार गुरु अपनी शक्ति से कुण्डलिनी को चेतन करके ऊपर की ओर चलाते हैं। गुरु का इस शक्ति पर पूर्ण प्रभुत्व होता है इसलिए वह गुरु के आदेश के अनुसार चलती है क्योंकि यह सहस्रार में स्थित परमसत्ता की पराशक्ति है। अतः यह केवल मात्र उसी का आदेश मानती है। इसका स्पष्ट अर्थ है कि जिस व्यक्ति को सहस्रार में स्थित उस परम तत्त्व की सिद्धि हो जाती है, वही इसके संचालन करने का अधिकारी है। यह शक्ति संपूर्ण विश्व में मात्र एक ही व्यक्ति के माध्यम से कार्य करती है।

अतः संसार में यह सिर्फ एक ही व्यक्ति के द्वारा सम्पन्न हो सकता है क्योंकि यह सार्वभौम सत्ता है, इसलिए यह व्यक्ति विश्वभर में अभूतपूर्व क्रांतिकारी परिवर्तन करने का सामर्थ्य रखता है।

यह तन विष की बेलरी,
गुरु अमृत की खान।
सीस दीये जो गुरु मिले
तो भी सस्ता जान।।

गुरु अंतःकरण पर जो वासना चढ़ी होती है उसे हटाकर श्रेष्ठ आस्था को स्थापित करते हैं। यहीं से आत्मा

www.the-comforter.org

परमात्मा बनने की ओर चल देती है। नर को नारायण बनाने की कला सद्गुरु ही जानते हैं। मनुष्य की मूल सत्ता को सद्गुरु ने अनुभव किया और वे इसी को अपने शिष्यों में बांटते हैं। गुरु शक्तिपात दीक्षा द्वारा साधक की कुंडलिनी शक्ति को जाग्रत कर देते हैं तब वह सुषुम्ना नाड़ी से उर्ध्व गमन करने लगती है और अंततः सहस्रार में लय हो जाती है, इसी को मोक्ष कहा गया है। गुरु कृपा पाने के लिए शिष्य को प्रेम एवं समर्पण का भाव रखना चाहिए। गुरु शिष्य के संबंधों की यह धारा ही गुरु परंपरा कही जाती है।

गुरु-शिष्य का संबंध मानव अस्तित्व के महत्तर आयामों, श्रेष्ठतर कामनाओं से संबंधित है। गुरु के अनुग्रह से ही कुंडलिनी का कार्य पूर्ण होता है और वह सहस्रार में पूर्ण रूप से लय हो जाती है तब शिष्य स्वयं ईश्वर बन जाता है। इतिहास साक्षी है कि भगवान राम एवं श्रीकृष्ण ने भी गुरु धारण किये थे।

यद्यपि उनके गुरु अच्छी तरह जानते थे कि उनके शिष्य कोई साधारण मनुष्य नही हैं फिर भी उन्होंने उन्हें दीक्षा दी और भगवान श्रीराम और श्रीकृष्ण ने असीम श्रद्धा व समर्पण से अपने सदगुरुओं की सेवा व पूजा अर्चना की थी। आध्यात्मिक मार्ग में गुरु का स्थान सबसे ऊँचा है। गुरु निर्गुण निराकार का सगुण साकार रूप है। लोगों के उत्थान हेतु ईश्वर मानव देह धारण कर गुरु रूप में इस धरती पर अवतरित होते हैं।

गुरु सिद्धयोग का मूलभूत आधार स्तंभ है।

सब धरती कागज करूं,
लेखनी सब बनराय।
सात समुद्र की मसि करूं,
गुरु गुण लिखा न जाये।।

सच्चा गुरु वह है जो समय समय पर आध्यात्मिक शक्ति के भंडार के

www.the-comforter.org

रूप में अवतरित होता है और गुरु शिष्य परंपरा द्वारा उस शक्ति को पीढ़ी दर पीढ़ी के लोगों में संचारित करता है। गुरु तो अजर अमर, अनादि अनंत है। गुरु का न पूर्व है न पश्चात। गुरु है परिपूर्णता, उससे बढ़कर तीनों लोकों में दूसरा कोई नहीं है। गुरु वे हैं जिन्होंने अपनी चेतना को पूर्णतया संस्कारित कर दिया है।

[redacted]

ईश्वर अपनी समस्त शक्तियों का प्रदर्शन करना चाहे तो माध्यम मनुष्य ही बनेगा। अतः गुरु ही इसके संचालन का अधिकारी है। जिस प्रकार मृत्यु जीवन का अन्तिम सत्य है उतना ही प्रगाढ़ एवं ध्रुव सत्य है कि बिना समर्थ गुरु के मानव जीवन मुक्त कदापि नहीं हो सकता। गुरु की महिमा का वर्णन शब्दों में बयां करना मुश्किल ही नहीं अपितु नामुमकिन है।

तीन लोक नौ खंड में,
गुरु ते बड़ा ना कोई,
करता करे ना करी सके,
गुरु करे सो होई।।

–राजकुमार आसवानी
बीकानेर (राज.)

www.the-comforter.org

हिन्दू धर्म विश्व धर्म होगा

"Divine Life (दिव्य जीवन) इस भूमि पर प्रकट हो गई, ये प्रकाश तो विश्व स्तर पर फैलेगा। हिन्दू धर्म विश्व धर्म होगा, मेरा उद्देश्य यही है। मगर वैज्ञानिक ढंग से होगा। तो घंटी बजा दी, अगरबत्ती वाली बात नहीं होगी। आप जिन शक्तियों को बाहर पूजते हो, वो सारी शक्तियाँ आपके अंदर हैं। जब पूरा ब्रह्माण्ड ही अंदर है तो वो देवता भी अंदर ही हैं, उनको अंदर ही चेतन किया जा सकता है।"

www.the-comforter.org

-समर्थ सद्गुरुदेव
श्री रामलाल जी सियाग
गुरु पूर्णिमा महोत्सव-2002

गुरु महिमा

" गुरु शिष्य परंपरा में दीक्षा का सिद्धान्त है। दीक्षा में गुरु देता-कुछ नहीं है। गुरु तो काँच में तस्वीर दिखाता है, देख लो,तुम क्या हो ?"

समर्थ सद्गुरुदेव का मिलना

कन फूँका गुरु हद का, बेहद का गुरु और।
बेहद का गुरु जब मिले, लगे ठिकाने ठौर।।

अर्थात्– कान फूँकने वाले साधारण गुरु जगत् में बहुत मिल जाएंगे। उनकी एक सीमा है। वे आध्यात्मिक मार्ग का पथ प्रदर्शन नहीं कर सकते हैं। लेकिन बेहद अर्थात् असीम कृपा दृष्टि बरसाने वाले, शिखर मण्डल तक पहुँचाने वाले गुरु तो और ही होते हैं, बिरले ही होते हैं।

और जब बेहद के गुरु मिल जाते हैं तो हमें वास्तविक परमानंद की प्राप्ति हो जाती है। सत्य का साक्षात्कार हो जाता है।

गतांक से आगे....

चेतना

-श्री अरविन्द

... परन्तु सर्वप्रथम तो हमें अपने विषय में नई बातें पता चलती हैं । मानसिक नीरवता के लिए जो तरीका हमने बताया है, वैसा ही तरीका यदि हम अपनाये और हम पूरी तरह से पारदृश्य बने रहें तो हम देखेंगे कि हमारे केन्द्रों में प्रविष्ट होने से पूर्व, केवल मानसिक तरंगें ही नहीं बल्कि सब कुछ, कामना- स्पन्दन, आनन्द लहरियाँ, संकल्प- स्पन्दन इत्यादि भी बाहर से आते हैं। हमें यह भी पता चल जायेगा कि हम तो सिर से पैर तक उन तरंगों को ग्रहण करने वाला एक यन्त्र हैं।

दरअसल न हम सोचते हैं, न इच्छा करते हैं, न कार्य में प्रवृत्त होते हैं, बल्कि हमारे अन्दर विचार आता है, इच्छा आती है, संवेग और कर्म भी आते हैं। यदि हम कहें, 'मैं सोचता हूँ अतः मेरा अस्तित्व है' अथवा 'मैं महसूस करता हूँ अतः मैं हूँ', या 'मैं इच्छा करता हूँ अतः मेरा अस्तित्व है' तो हम कुछ-कुछ उस बच्चे की तरह हो जाते हैं जो यह समझता है कि समाचार वाचक या आरकेस्ट्रा टेलिविजन के बाक्स में छुपा हुआ है और टेलिविजन एक विचारशील अंग है। क्योंकि ये सारे 'मैं' न हम हैं, न ही हमारे हैं और उनका संगीत सारे विश्व का राग है।

इसका विरोध करने की हमें इच्छा होने लग सकती है, क्योंकि आखिर वे हैं तो हमारे अहसास, हमारे कष्ट, हमारी कामनाएँ: वह हमारी संवेदनशीलता है, और वह स्वयं हम हैं, कोई संदेश ग्रहण करने वाली तार की मशीन तो नहीं है। और यह ठीक भी है कि एक तरह से वह हम स्वयं ही हैं - इस दृष्टि से कि हमने अपनी आदत बना ली है कि कुछ

www.the-comforter.org

खास-खास स्पन्दनों की ही हमारे अन्दर प्रतिक्रिया हो, कुछ खास चीजें ही हमारे हृदय को प्रभावित करें, व्यथित करें, अन्य नहीं। और मालूम होता है कि आदतों का यह समूह अन्त में जम कर एक व्यक्तित्व बन गया है जिसे हम अपना आप कहते हैं। परन्तु यदि हम और ध्यान से देखें तो हमारा यह कहना ठीक नहीं है कि जिसने ये सारी आदतें बना ली हैं वह 'हम' हैं; सच में तो हमारा समाज, हमारी शिक्षा, हमारा अपने पुरखों से साम्य, हमारे पुराने चले आ रहे रीति-रिवाज हैं जिन्होंने हमारे लिए यह चुनाव किया है और हर क्षण यह फैसला करते हैं कि हमारी क्या मंशा है, हम क्या चाहते हैं, क्या हमें अच्छा लगता है और क्या नहीं। और यह सब इस तरह होता जाता है मानो जीवन हमारे बगैर ही चलता रहता हो तो इन सब के बीच वास्तविक 'मैं' किस क्षण फूट

निकलता है? श्री अरविन्द कहते हैं, गतिविधि, व्यक्तित्व, चरित्र संबंधी कुछ आदतें, कुछ विशिष्ट क्षमताएँ, पित्त सार्वभौम प्रकृति हमारे अन्दर संचय करती रहती है और इसी को प्रायः आप कहते हैं। और न ही हम यह कह सकते हैं कि इस 'हम स्वयं' का

वास्तविक स्थायित्व है, वह तो समान स्पन्दनों और रचनाओं की लगातार आवृत्ति और बार-बार घटित होना है जिससे स्थायित्व का आभास हुआ करता है। क्यों वे वही तरंग-दैर्ध्य होते हैं जिन्हें अपने समाज और शिक्षण सिद्धान्तों के अनुसार सदा पकड़े रखते हैं अथवा वे हमें पकड़े रखते हैं। वे सदा वही मानसिक, प्राणिक और अन्य स्पन्दन होते हैं जो हमारे केन्द्रों में वापिस लौट लौट कर व्यक्त हुए जाते हैं और जिन्हें हम स्वतः, बिना सोचे-समझे, अनन्त काल तक अपनाते हैं। परन्तु वस्तुतः सब कुछ निरन्तर प्रवाह की स्थिति में रहता है और हमारे अपने मानस से अधिक विशाल मानस, अर्थात् सार्वभौम मानस, अपने प्राण से अधिक विशाल प्राण अर्थात् सार्वभौम प्राण से ही सब हमारे पास आया करता है, अथवा और भी नीचे स्थित अवचेतन लोकों से आता है या और भी ऊपर के अतिचेतन लोकों से। इस तरह इस क्षुद्र अग्रवर्ती पुरुष को चारों ओर से घेरे हुए 'लोकों' की एक पूरी श्रेणी है, जो उस पर छाई हुई है, उसे सहारा देती है, उसमें व्याप्त है और उसे प्रोत्साहित करती है जैसे प्राचीन ऋषियों का भी अनुभव था- ऋग्वेद कहता है, 'प्रयत्न बिना ही, सब लोक एक दूसरे में आते-जाते हैं।' (२.२४.५) अथवा श्री अरविन्द के कथनानुसार, वह चेतना-स्तरों का क्रम है जो शुद्ध आत्मतत्त्व से लेकर जड़तत्त्व तक लगातार ऊपर से नीचे सीढ़ी की तरह उतर रहे हैं और जिनका हमारे प्रत्येक केन्द्र के साथ सीधा संबंध है। पर हमें खाली ऊपर ऊपर की थोड़ी-सी बुलबुलाहट का ही पता है।

इस सब के मध्य 'हम' का क्या बचा रह गया? सच कहें तो बहुत ही कम अथवा सारा ही; यह तो इस पर निर्भर करता है कि हमने अपनी चेतना को किस स्तर पर केंद्रित किया है।

क्रमशः अगले अंक में...

www.the-comforter.org

गतांक से आगे...

सिद्ध-योगियों की महिमा

साधकों के ज्ञान बोध के लिए स्वामी शिवोमतीर्थ महाराज की पुस्तक 'अंतिम रचना' के लेख क्रमशः शुरू किये हैं, आशा है साधकों की आराधना में सहायक सिद्ध होंगे। उनको प्राचीन काल की आराधना की कठिनाईयों के बारे में जानकारी मिलेगी, कितनी कठिन आराधना थी और सद्गुरुदेव सियाग ने अति सहज में सिद्धयोग को धरती पर मानव मात्र के कल्याण के लिए उतारा है।

जब लल अपने ससुराल में थी तो गाँव में एक बार, कोई बड़ा आयोजन किया गया था। लल के ससुर ने देखा कि उनकी बहु लोगों में निर्वस्त्र घूम रही है। इस पर उसने बहू को डांटते हुए कहा, 'तुम्हें इस दशा में घूमते हुए शर्म नहीं आती ? अंदर जाकर पूरे कपड़े पहन कर आ' इस पर लल ने कहा, लोग ! कहाँ हैं लोग ? आपको यह लोग दिखाई दे रहे हैं इनमें एक भी आदमी नहीं। यह सारा भेड़- बकरियों का समूह है। जरा खिड़की में से बाहर झाँककर तो देखिए, आपको सारी स्थिति स्पष्ट हो जाएगी। इस पर जब उसके ससुर ने खिड़की में से बाहर झाँक कर देखा तो लोगो के स्थान पर उसे भेड़- बकरियों का समूह दिखाई दिया। यह देखकर लल का ससुर अवाक रह गया।

इसका भाव एकदम स्पष्ट है । संसार में प्रायः लोग विषयों तथा भौतिक सुखों की कामना करते हुए, पेट भरने में ही लगे रहते हैं। इसमें उचित-अनुचित का विवेक भी उनमें नहीं रहता। वासना में अंधे बने, आस-पास की परिस्थितियों से भी उदासीन बने रहते हैं। उनमें तथा पशुओं में क्या अन्तर है ? बस ! एक आकृति का ही अन्तर है। यह बात सब जानते-मानते हैं किन्तु आचरण पशुओं के समान ही करते हैं। जुबानी जमा-खर्च करने वाले, इस बात पर धुआंधार व्याख्यान देने वाले

www.the-comforter.org

प्रवचनकार तो बहुत मिल जाएंगे किन्तु किसी को प्रत्यक्ष अनुभव करा देना संतों का ही काम है।

यह कह पाना तो कठिन है कि यह घटना कहाँ तक सत्य है क्योंकि किसी सभ्य महिला का, अपने ससुर की उपस्थिति में, इस प्रकार लोगों के सामने निर्लज्ज अवस्था में घूमने वाली बात गले नहीं उतरती। हां ! यह संभव है कि उस समय लल परम्परागत उचित परिधान में न हो जिस पर उसके ससुर ने उसे डांट दिया हो। अनुचित एवं अपर्याप्त वस्त्रों को नग्नता की संज्ञा दी ही जाती है। तब लल ने अपने ससुर को यह अनुभव कराया हो, प्रत्यक्ष अनुभव। अनुयायियों ने उसी बात को बढ़ा-चढ़ा कर कहा हो।

यह पहले कहा जा चुका है कि लल चित्त पर से सभी आवरण उतार चुकी थी। यही उसकी नग्नावस्था थी। यह अवस्था वाह्य-शारीरिक नहीं, आन्तरिक थी। लौकिक नहीं आध्यात्मिक थी। नग्नता अर्थात निर्मलता उसका स्वभाव विकसित हो चुका था। प्रभु-प्रेम के आवेश तथा मस्ती में जब वह आनन्द-विभोर हो नाच उठती थी तो यही उसका नग्न नृत्य था। भावावेश में कभी भागने लगती, कभी बच्चों जैसी क्रियाएँ करती, कभी रोती तो कभी हंसने लगती। तब ऐसी अवस्था में भला, अपने वस्त्रों को संभालने की सुध कहाँ रहती है। सामान्यजन उससे मजाक करते, उसे नग्न कहते, उस पर लांछन लगाते थे। उन्हें इस बात का पता नहीं था कि वे स्वयं नासमझ हैं।

सारा संसार लल को अपने चित्त पर सांसारिक वासनाओं, मानसिक कामनाओं तथा विकारों के फटे गन्दे चीथड़े लपेटे घूमता दिखाई देता था। इस स्थिति में से निकलने का कोई प्रयत्न भी करता है तो दोबारा गर्त में जा गिरता है। सारा जगत् वासना में अंधा हो रहा है। लल के समीप संसार के सभी प्राणी, पशु के समान थे जो भाँति-भाँति के कई प्रकार के बंधनों में

www.the-comforter.org

जकड़े थे। उनके गले में वासना तथा अभिमान की रस्सी बंधी थी। लल वासनामुक्त, उन्मुक्त, आनन्ददायक विहार करती, थिरकती-नाचती थी। वह भौतिक विषय वासनाओं एवं सांसारिक सुख-सुविधाओं की भूखी नहीं थी अपितु जगत्-विषयों की भूख को वह सद्मार्ग में अवरोध मानती थी। वह तो बस दीवानी थी, प्रभु-प्रेम की दीवानी।

काश्मीर में उस समय एक प्रसिद्ध मुसलमान संत थे। कहते हैं कि जब उनका जन्म हुआ तो कुछ दिनों तक उन्होंने अपनी माता का स्तनपान नहीं किया। लल घूमते हुए उस गांव में जा पहुँची तो पता चला कि गांव में किसी बालक का जन्म हुआ है तथा वह अपनी माता का दूध नहीं पीता। लल को पता चल गया कि बालक एक भावी महान संत होगा। वह उस शिशु के पास गई तथा उसके कान के पास अपना मुँह लगाकर बोली, 'जब जन्म लेते समय शर्म नहीं आई तो स्तनपान में संकोच क्यों ?' कहा जाता है कि उसके पश्चात् वह शिशु अपनी माता का दूध पीने लगा।

संत जब अध्यात्म गगन में विहार करने लगता है तो सम्प्रदाय, जाति, देश, काल, भाषा तथा साधन-प्रणाली की सभी कल्पित सीमाएँ नीचे छूट जाती हैं।

वह बालक जब बड़ा होकर संत-पदवी प्राप्त हुआ तो लल के साथ उसका मिलना तथा सत्संग यदा कदा हुआ ही करता था।

लल के गृह त्याग के पश्चात् उसका पति उसे वापिस लिवा लाने के लिए सतत् प्रयत्नशील रहा। उसे लल को समझ न पाने तथा अपने किए पर बहुत पछतावा था। ऐसी नेक पत्नी को उसने घर छोड़ने पर विवश कर दिया। उसने लल को घर चले आने के लिए राजी करने हेतु पुरोहित को उसके पास भेजा किन्तु लल ने उसे मना कर दिया।

क्रमशः अगले अंक में...

www.the-comforter.org

गतांक से आगे...

रूपान्तरण (Transformation)

''आवश्यक है कि अच्छी हो या बुरी, स्वयं परिपाटी ही बदली जाये, क्योंकि अच्छे के साथ अनिवार्य रूप से बुरा जुड़ा हुआ है। सब चमत्कार केवल हमारी दीनता का उलटा अथवा कहना चाहिए सीधा पहलू भर है। पर जरूरत हमें एक सुधरे-सँवरे संसार की नहीं, नये संसार की है। एक 'उच्च प्रकार का समाहित वातावरण हमें नहीं चाहिए; बल्कि यदि असंगत न रहे तो हम कह सकते हैं कि निम्न प्रकार के समाहित वातावरण की जरूरत है, यहाँ सभी कुछ पुण्यधाम हो जाना चाहिए।''

अतः हम अब से विकास की केवल कुछ साधारण यात्रा रेखाओं का, अथवा कहना चाहिए कठिनाइयों का निर्देश भर कर सकते हैं, किन्तु निश्चित रूप से यह जाने बिना ही कि वास्तव में प्रक्रिया यही है। अभी प्रयोग जारी है। एक बार जब यह, केवल एक बार, किसी एक भी मनुष्य के अंदर सफल हो जायेगा, तब रूपांतर की शर्तें तक बदल जायेंगी, क्योंकि मार्ग बन चुका होगा, अंकित हो चुका होगा, प्रारंभिक कठिनाइयाँ साफ हो चुकी होंगी। जिस दिन प्लैटो ने फैड्रूस की अपने अंदर कल्पना की थी, उसी दिन उसने संपूर्ण मानव-जाति को फैड्स की संभावना तक ऊपर उठा दिया था। जिस दिन कोई मनुष्य रूपांतर की कठिनाइयों पर विजय पायेगा, उस दिन सकल मानव-जाति को एक ज्योतिर्मय जीवन की, सत्य-अमर जीवन की संभावना में ऊँचा उठा लेगा।

अब साधक के सामने सबसे पहले जो समस्या खड़ी है उसका फिर भी कुछ अनुमान तो हम लगा ही सकते हैं। हमारे प्रेरणा-मुहूर्तों में जब यह अग्नि,

www.the-comforter.org

मानस में प्रज्ज्वलित होती है, तब जो प्रबल उत्तेजना, लगभग एक भौतिक ताप वह उत्पन्न करती है, उससे हम अपरिचित नहीं हैं। यह भी हमें विदित है कि हमारे आध्यात्मिक क्षणों में जब अग्नि हृदय में ज्वाला बन जलती है तब उरस् अंगारों की तरह दहकता है, ऐसा तपता है कि त्वचा तक रंजित हो जाती है और अनजान आदमी को भी योगी के चारों ओर एक प्रकार का विकिरण, एक तेज दिख पड़ता है। जिस घड़ी हम शक्ति का आह्वान करते हैं अथवा हमारे वैश्व उन्मीलन की वेला आती है और यह अग्नि हमारे प्राण के अंदर सुलग उठती है, तब नाभि-स्तर पर यह एक तेज धड़कन की तरह भासती है; सारी देह सिहरने लगती है, मानो ज्वरजनित प्रकम्प ही हो, क्योंकि बहुत छोटे से मार्ग में बहुत अधिक शक्तिप्रवेश कर रही होती है। किन्तु इस तप्त सुवर्णरज के, देहकोशाणुओं के अंतर्वर्तिनी इस सुरासौदामिनी के विषय में क्या बतायें ? अपनी सीधी-सरल भाषा में श्री माँ कहती हैं कि वह सारे शरीर में खोलना शुरू कर देती है, मानो हंडिया ही फूट जायेगी। ऋषियों का भी यही कहना है कि यदि मनुष्य बहुत जल्दबाजी करे तो 'कच्चे घड़े की तरह' टूट जाता है। तिस पर यदि एक पूरी की पूरी चीज के सृजन का सवाल होता तो भी समस्या इतनी जटिल न रहती, पर अपने पास जो है हमें उससे बनाना है; वर्तमान स्थिति से एक और स्थिति में, पुरानी व्यवस्था छोड़, एक नवीन व्यवस्था में जाने की जरूरत है। चिरकाल से चला आ रहा एक दिल है, दो फेफड़े हैं।

श्री माँ का कहना है कि संचार हेतु पराशक्ति को प्रक्षिप्त करने संक्रमण की ही समस्या है। संक्रमण को प्रक्षिप्त करने के लिए किस क्षण पर दिल को

www.the-comforter.org

रोका जाये ? समस्या है संक्रमण के समय कोशाणु संत्रस्त न हो उठे इसके लिए, बार-बार प्रयोग करने की आवश्यकता है, अत्यंत सूक्ष्म मात्रा के बार-बार, अनगिनत बार प्रयोग करने की आवश्यकता है। अब मोटे प्रयोगों द्वारा उन्हें अभ्यास कराना जरूरी है। अतएव पहला सवाल है शरीर को ढालने का, जिसके लिए अनेक वर्ष, शायद कई शताब्दियाँ चाहिए। श्री अरविन्द चालीस वर्ष तक यही कार्य करते रहे और श्रीमाँ पचास वर्ष से यह कर रही है। सो इसे क्रियान्वित करने के लिए हमारी अभी पहली जरूरत है जीवित बने रहने की, मौत से ज्यादा तेज बढ़ना जरूरी है। श्री माँ कहती हैं कि दरअसल अभी यह जानना बाकी है कि रूपांतर की ओर इस दौड़ में दोनों में से कौन आगे निकलेगा. वह व्यक्ति जो अपनी देह को दिव्य सत्य की प्रतिमा में रूपांतरित करने की इच्छा रखता है, या इस देह की जर्जर होते चले जाने की यह पुरानी आदत।

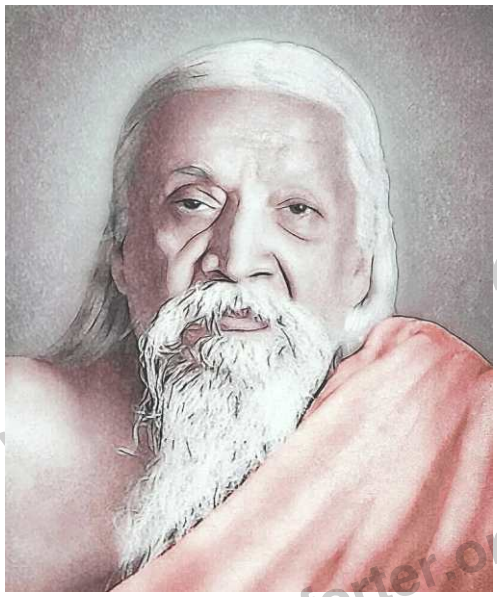

यह तो स्पष्ट ही है कि 'इस कार्य का एक ही जीवन में पूरा होना आवश्यक है।' एक जन्म से दूसरे जन्म में हमारी आत्मा और मानस की, हमारे प्राण की भी पिछली प्रगति को पुनः प्राप्त करना संभव है । इस जीवन में वे स्वतःस्फूर्त बोधों का, कुछ विशेष प्रकार की नैसर्गिक कुशलताओं का, पहले से ही अर्जित विकास का रूप ले लेती हैं। बस दस-बीस साल अपना पाठ, जरा फिर से दोहरा लेने से ही पिछले जन्मों की कड़ी हाथ लग

www.the-comforter.org

जाती है - एक और भी बहुत ही अद्भुत अनुभूति हुआ करती है जिसमें ठीक वह स्थल नजर आता है जहाँ पूर्व जन्मों की उपलब्धि समाप्त होती है और आगे प्रगति आरंभ होती है। मनुष्य वह तार फिर से जोड़ लेता है। किन्तु जहाँ तक शरीर का प्रश्न है स्पष्ट ही है कि कोशाणुओं का, भौतिक चेतना का विकास अगले जन्म में साथ नहीं जा सकता। सब या चिता में छिन्न-भिन्न हो जाता है या मिट्टी में। यदि हम चाहते हैं कि मानवीय विकास आगे रुके नहीं और अतिमानसिक जीव का आविर्भाव हमारे रक्त-मांस में हो, किसी अपरिचित नये जीव में नहीं जो हमारा मनोमयी मानव-जाति को पदच्युत कर डाले तो यह अनिवार्य है कि एक मनुष्य इस कार्य को एक ही जीवन में पूरा करे । यदि यह क्रिया एक बार सफल हो जाये तो उसका दूसरों में संक्रमण संभव होगा (इसे हम आगे स्पष्ट करेंगे) । श्री अरविन्द कहते थे कि संपूर्ण अतिमानव का, जैसा कि हमने उसे ज्योतिर्मय, भारविहिन, सुनम्य चित्रित करने की चेष्टा की है. आविर्भाव हो सके इसके लिए तीन शताब्दियाँ चाहिए, और वे विशद दृष्टि रखते थे। सो संपूर्ण अतिमानव न भी बने (प्लैटो भी कोई एक दिन में नहीं बनता) तो कम से कम एक संक्रमणकालीन जीव हमारे हाड़-मांस में बनाना जरूरी है जो मानवीय और अतिमानवीय, दोनों जातियों के बीच की कड़ी बने। अर्थात् एक ऐसा जीव होना चाहिए जिसने न केवल अतिमानसिक चेतना प्राप्त कर ली हो, बल्कि उसकी देह में, यदि असंगत न रहे तो कह सकते हैं इतनी अमरता आ चुकी हो कि वह संक्रमणकाल में बनी रहे और साथ ही इतनी लचक और शक्ति रखती हो जो

www.the-comforter.org

उसे निज रूपांतर साधित करने के लिए पर्याप्त हो, अथवा, यदि यह संभव न हो तो, पार्थिव जन्म के सामान्य साधनों का आश्रय लिये बिना अपने स्वकीय बल से वह अतिमानस का सृजन कर सकती हो। क्योंकि रूपांतर की अत्यंत विकट बाधाओं में से एक यह दारुण पशुता है जो हमें दाय में मिली है, यह सब भार जो मानवसन्तति होने भर से हमारे अवचेतन पर लद जाता है और भौतिक गर्भाधान द्वारा स्वतः आगे संक्रांत होता रहता है- अग्नि के उबालों से अधिक नहीं तो कम से कम उतनी ही कठिनाई इसने भी पैदा कर रखी है। यह है दूसरी समस्या, पर सच पूछो तो शायद देह की कठिनाइयाँ इतनी अधिक नहीं, केवल लगती हैं, असली कठिनाई यही है।

क्रमशः अगले अंक में...

www.the-comforter.org

Kundalini Awakening

Indian Rishis (Sages), in relation to the origin of universe, found in the state of deep meditation, that the entire universe exists within the human body. When they delved deeper in meditation, they found that the Creator of the universe is residing over the crown of the head in 'Sahasraar' and his divine power (Kundalini) is residing at the base of the spinal column in 'Mooladhaar'. The world was created by these two.

The Kundalini descended to the base on the command of the Supreme Creator. The upward movement of Kundalini leading to its finally reaching 'Sahasraar' after being awakened is called salvation.

According to the process in 'Shaktipat Initiation' in 'Guru-Shishya Parampara' (Master-disciple tradition), the Samarth

www.the-comforter.org

Guru (Empowered Spiritual Master) awakens the Kundalini by his power and makes her travel upwards. As the Guru has complete control over the Kundalini, it functions as per his

commands.

As Kundalini is the ' Para shakti' (highest form of energy) of the Supreme Power dwelling in 'Sahasraar', it follows the command only of the Supreme Power.

From this it becomes very clear that only the person who attains the 'Siddhi' of that 'Param tattva' dwelling in 'Sahasraar', is entitled to control Kundalini. Since Kundalini works through only one person at any given time in the world, so the job of awakening of Kundalini can be done by only one person at any given time in the world. Since such a Spiritual Master is 'Sarvabhoumsatta' (universal consciousness), he is capable of bringing unprecedented revolution in the world.

The feminine divine power (Devi Shakti) whom we worship by the name of, Radha, Sita, Parvati, Amba, Bhavani, Yogmaya, Saraswati in the world, dwells in our body in a coiled form in three and a half layers at the base of the spinal column (in Mooladhaar Chakra) in a dormant state. This divine spiritual energy has been called Kundalini by the Yogis (Spiritual Masters). A man's behaviour remains like an animal in the absence of an awakened Kundalini. The Kundalini can be awakened only by the grace of an empowered Spiritual Master.

www.the-comforter.org

Kabirdas ji has described the Kundalini in the following couplet (Doha)-

Kabira dhara agam ki,
Sadguru dai lakhai !
Ulat tahi padhiye sada,
swami sang lagai !

According to sages, a stream (feminine divine energy) while descending from the ' Agamlok' , went on creating all other 'lokas' before it finally settled in 'Mooladhaar'. In this way all the 'Lokas' have been created by that 'Jagat Janani Radha' or Kundalini (Supreme divine power). It is possible for it to reach its Supreme Master (Krishna) after being awakened in human life. The union of Radha and Krishna or 'Prithvi and Akaash tattva'(Earth and Sky elements) is known as 'Moksha'.

The empowered Spiritual Master who has attained the Siddhi of the 'Akash Tattva' (Krishna), alone can awaken the Kundalini and help one attain salvation, no one else.

www.the-comforter.org

This can also be verified by our religious scriptures and by going back in history too. Swami Vivekanand interacted with many Spiritual Masters but no one could awaken the 'Tattvagyan' in him. Finally, he found the answer when he met Shri Ramkrishna Paramhans.

Maharishi Shri Aurobindo has described Kundalini as- It is a 'yogashakti'. It exists as coiled

form in all the 'Chakaras' in our body and its form at the base (Mooladhar) has been called Kundalini in 'Tantra' (Scripture). But it is present on the crown of our head as a Supreme Power (Divya Shakti) where it is not coiled and dormant but is awakened, conscious, powerful, expanded and vast. Here it is waiting to be expressed. We have to open ourselves to this power. This power manifests in our mind as a supreme human power (Diyva Manas Shakti). It can perform all of those work which cannot be even expressed by an individual's mind. It becomes 'Yogic Manas Shakti' at this time. In the same way when it manifests in the 'Prana' (Breath of life) or 'sharir' (body) and works here, it appears as 'Yogic Pranic Shakti' or 'Yogic Sharirik Shakti' (Yogic Bodily Power). It can spread and expand on the outer, above and below and then can be awakened in all these forms and can become a well-defined power for all the things. It can expand itself in lower areas of body and after establishing its kingdom here, it can expand itself in the vastness above. Then it can connect the lowest levels in our body with the highest levels in the above regions of our body. It can take the man in a state of neutrality or a universal consciousness and liberate him forever.

-Gurudev Shri Ramlal ji Siyag

www.the-comforter.org

सद्गुरुदेव की दिव्य लेखनी से...

"कन फूँका गुरु हद का, बेहद का गुरु और।
बेहद का गुरु जब मिले, लगे ठिकाने ठौर।।"

"हरि रूठे कुछ डर नहीं, तूँ भी दे छिटकाय।
गुरु को राखो सीस पर, सब विधि करे सहाय"।।
(सहजोबाई)

ब्रह्मा, विष्णु, महेश्वर न चहिए, इन सिर लागी काई।
इनके भरोसे कोई मत रहना, इनहू मुक्ति न पाई।।
(संत कबीर)

कबीरा चारा अगम की सद्गुरु दई बताय।
उलट नाहि पड़िये सदा स्वामी संग लगाय।। राधाकृष्ण।

ध्यानमूलं गुरोर्मूर्तिः पूजामूलं गुरोः पदम्।
मंत्रमूलं गुरोर्वाक्यं मोक्षमूलं गुरोः कृपा।। गुरुगीता।।

गुरुर्ब्रह्मा गुरुर्विष्णु गुरुर्देवो महेश्वरः।
गुरुः साक्षात् परब्रह्म तस्मै श्री गुरवे नमः।।

"तीन्ही लोक नेवून निर्माण जाले,
तया दवरायाति कोणी न बोले।
जगीं थोरला देव तो चोरलाये,
गुरुराणा तो सर्वथाही न दीसे।।"

"तीनों लोक (भूलोक, द्युलोक, पाताल लोक) जहाँ से उत्पन्न हुए उस परब्रह्म को कोई नहीं कहता। जगमें सर्वोत्तम देवता चुराया गया है। उसके चोरी चले जाने के पश्चात वह दिखाई नहीं दे रहा है। उस सर्वदेवाधिदेव की चोरी की गई है, किन्तु सद्गुरु रूपी गुप्तचर की सहायता के बिना वह नहीं दीख सकेगा"।।

www.the-comforter.org

गतांक से आगे...
कठिनाई में...

योग के आधार

-महर्षि श्री अरविन्द

ये सब चीजें कुछ हद तक बहुत उत्साहवर्धक और संतोषप्रद मालूम हो सकती हैं और उन लोगों के लिये अच्छी हैं जो उन सब स्तरों में कुछ आध्यात्मिक अनुभूतियाँ प्राप्त करना चाहते हैं; परंतु अतिमानसिक सिद्धि एक ऐसी चीज है जिसकी शर्तें अत्यंत कठोर हैं और उन्हें पूरा-पूरा पालन करना बहुत कठिन है और फिर सबसे अधिक कठिन है अतिमानस को भौतिक क्षेत्र में उतार लाना।

कामना से एकदम मुक्त होने में बहुत अधिक समय लगता है। परंतु एक बार यदि तुम उसे अपनी प्रकृति से निकाल सको और यह अनुभव कर सको कि यह एक शक्ति है जो बाहर से आती है और तुम्हारे प्राण और शरीर के ऊपर अपना पंजा फैला देती है तो फिर इस आक्रमणकारी से छुटकारा पाना अधिक आसान हो जायेगा। परंतु तुम्हें यह अनुभव करने का अत्यधिक अभ्यास हो गया है कि वह कामना तुम्हारा ही एक अंग है अथवा तुम्हारे अंदर जमकर बैठ गयी है-इसी कारण उसकी क्रियाओं को रोकना और अपने ऊपर से पुराने आधिपत्य को दूर करना तुम्हारे लिये बहुत कठिन हो गया है।

तुम्हें दूसरी किसी चीज पर, चाहे वह कितनी ही अधिक सहायक क्यों न प्रतीत होती हो, एकदम निर्भर नहीं करना चाहिये, बल्कि प्रधानतः, प्रथमतः और मूलतः शक्ति पर ही निर्भर करना चाहिये, सूर्य और प्रकाश सहायक हो सकते हैं और अगर वे वास्तविक सूर्य और वास्तविक प्रकाश हैं तो वे सहायक होते भी हैं, पर फिर भी वे गुरु की शक्ति का स्थान नहीं ग्रहण कर सकते।

साधक की आवश्यकताएँ यथासंभव कम ही होनी चाहिये क्योंकि ऐसी चीजें बहुत कम ही होती हैं जिनकी सचमुच जीवन में आवश्यकता पड़ती हो। बाकी चीजें या तो उपयोगिता के कारण काम में लायी जाती हैं या

www.the-comforter.org

जीवन को सजाने के लिये या विलासिता के लिये व्यवहृत होती हैं।

योगी को इन चीजों को रखने या भोग करने का अधिकार केवल नीचे लिखी हुई कोई अवस्थाओं में से किसी एक अवस्था में होता है

अगर वह अपने साधनकाल में इनका व्यवहार एकमात्र इस उदेश्य से करता है कि उसे आसक्ति और कामना से रहित होकर चीजों को अधिकृत करने का अभ्यास हो और वह यह सीख सके कि किस तरह यथार्थ रूप में, भागवत संकल्प के अनुसार चीजों का व्यवहार किया जाता है, उनका उचित प्रयोग किया जाता है, तथा उनका ठीक-ठीक संगठन, शंखला और परिणाम निश्चित किया जाता है अथवा (२) अगर वह कामना और आसक्ति से वास्तव में मुक्ति पा चुका हो और इन चीजों की हानि से, उनके न मिलने से या उनसे वंचित हो जाने से किसी भी प्रकार से जरा भी विचलित या विक्षुब्ध न हो।

अगर उसे किसी प्रकार का लोभ होता हो, कोई कामना होती हो, किसी चीज की वह मांग करता हो, किसी अधिकार या भोग के लिये दावा करता हो, कोई चीज न मिलने पर या किसी चीज से वंचित हो जाने पर उसे चिंता, शोक, क्रोध अथवा बेचैनी होती हो तो इसका मतलब यह है कि उसकी चेतना मुक्त नहीं हुई है और जो चीजें उसके अधिकार में हैं उनका उपयोग करना उसके लिये साधना के विपरीत है और अगर उसकी चेतना मुक्त भी हो गयी हो तो भी वह तब तक चीजों को रखने का अधिकारी नहीं हो सकता जबतक कि वह यह न सीख जाये कि किस तरह चीजों का अपने लिये नहीं, बल्कि भागवत संकल्प के अनुसार, उसके एक यंत्र के रूप में, व्यवहार संबंधी ठीक-ठीक ज्ञान और क्रिया को जानते हुए उपयोग किया जाता है, किस तरह उस जीवन को समुचित साधनों से संपन्न किया जाता है जो अपने लिये नहीं, बल्कि भगवान् के लिये और भगवान् में यापन किया जाता है।

क्रमशः अगले अंक में...

www.the-comforter.org

यादों के पल (गुरुपूर्णिमा जुलाई 2009)

www.the-comforter.org

सिद्धयोग :- शक्तिपात दीक्षा द्वारा कुण्डलिनी जागरण

www.the-comforter.org

भारतीय ऋषियों ने सृष्टि की उत्पत्ति के संबंध में अंतर्मुखी होकर खोज की तो पाया कि संपूर्ण ब्रह्माण्ड, मनुष्य के शरीर में है। जब हमारे ऋषियों ने और गहन शोध किया तो पाया कि इस जगत् को रचने वाला सहस्रार में स्थित है और उसकी शक्ति मूलाधार में। इन दोनों के कारण ही संसार की रचना हुई है।

उस परम पुरुष की शक्ति, उसके आदेश से नीचे उतरती गई और अलग-अलग बंध लगाकर सभी लोकों की रचना करके मूलाधार में स्थित हो गई। इसके चेतन होकर उर्ध्वगमन करते हुए सहस्रार में पहुँचने का नाम ही 'मोक्ष' है। मोक्ष की प्राप्ति जीते जी होती है। मरने के बाद मोक्ष की कल्पना करना, एक मृगमरीचिका ही है और कुछ नहीं।

गुरु-शिष्य परंपरा में जो शक्तिपात दीक्षा

का विधान है, उसके अनुसार गुरु अपनी शक्ति से कुण्डलिनी को चेतन करके ऊपर को चलाते हैं। गुरु का शक्ति पर पूर्ण प्रभुत्व होता है, इसलिए वह उस गुरु के आदेश के अनुसार चलती है। क्योंकि यह सहस्रार में स्थित परमसत्ता की पराशक्ति है अतः यह मात्र उसी का ही आदेश मानती है। इसका स्पष्ट अर्थ है कि जिस व्यक्ति को सहस्रार में स्थित उस परम तत्त्व की सिद्धि हो जाती है, वही इसका संचालन करने का अधिकारी है। यह शक्ति विश्व में, एक समय में, मात्र एक ही व्यक्ति के माध्यम से कार्य करती है। क्योंकि यह सार्वभौम सत्ता है, इसलिए वह व्यक्ति विश्वभर में अभूतपूर्व क्रांतिकारी परिवर्तन करने की सामर्थ्य रखता है।

अध्यात्म विज्ञान सत्संग केन्द्र, जोधपुर के संस्थापक व संरक्षक, समर्थ सद्गुरुदेव श्री रामलालजी सियाग द्वारा शक्तिपात दीक्षा से साधक की कुण्डलिनी जाग्रत हो जाती है। अपने सद्गुरुदेव बाबा श्री गंगाईनाथजी योगी ब्रह्मलीन (जामसर) के आदेशानुसार गुरुदेव इस दिव्य ज्ञान को विश्व भर में निःशुल्क बाँट रहे हैं।

शक्तिपात से जब कुण्डलिनी शक्ति जाग्रत हो जाती है तो उर्ध्वगमन करने लगती है। कई जन्मों के संस्कारों के कारण रास्ता अवरूद्ध रहता है। अतः साधक को विभिन्न प्रकार की यौगिक क्रियाएँ जैसेः- आसन, बंध, मुद्राएँ एवं प्राणायाम स्वतः ही होने लगते हैं। वह शक्ति साधक का शरीर, प्राण, मन और बुद्धि अपने अधीन कर लेती है और ध्यान के समय विभिन्न प्रकार की यौगिक क्रियाएँ स्वयं करवाती हैं। इस प्रकार जो क्रियाएँ होती हैं उन्हें साधक न तो स्वयं करने की स्थिति में होता है और न ही रोकने की।

गुरुदेव के अनुसार भौतिक विज्ञान के शोधकर्त्ताओं की असंख्य समस्याओं का समाधान, इस ज्ञान से हो जाएगा। समाधि स्थिति में वह परमसत्ता हर समस्या का समाधान शोधकर्ताओं को करवा देगी। इस प्रकार मनुष्य जाति की असंख्य समस्याओं का समाधान हो जाएगा।

गुरु-शिष्य परंपरा में जिस सिद्धयोग अर्थात् महायोग का वर्णन है, उसके

www.the-comforter.org

आदि गुरु कैलाशवासी भगवान् परशिव हैं। शिव से यह ज्ञान अमर कथा द्वारा महायोगी श्री मत्स्येन्द्र नाथ जी को मिला। उनके परम शिष्य महायोगी श्री गोरखनाथजी ने इस सिद्धयोग से संसार का जो कल्याण किया है, वह सर्वविदित है। यह योग संसार के त्रिविध तापों- आधि दैहिक, आधि भौतिक व आधि दैविक (Physical, Mental & Spiritual) का शमन (नाश) करता है। इसलिए संसार की कोई भी असाध्य बीमारी व विज्ञान सम्बधित समस्या नहीं है, जिसका सिद्धयोग में समाधान न हो। अर्थात् सिद्धयोग में सब कुछ संभव है। सदगुरुदेव श्री रामलालजी सियाग की शक्तिपात दीक्षा से यह मानवता में मूर्तरूप ले रहा है।

सिद्धयोग से लाभ-

समर्थ सद्गुरुदेव श्री रामलाल जी सियाग से मंत्र दीक्षा प्राप्त करने के बाद, उनके चित्र का नियमित ध्यान एवं संजीवनी मंत्र के जाप द्वारा मातृशक्ति कुण्डलिनी के जागरण से साधक में निम्न परिवर्तन आ जाते हैं-

. सभी प्रकार के असाध्य रोगों जैसेः-एड्स, कैंसर, डायबिटीज, टी.बी, दमा, ब्लड प्रेशर, मिर्गी, बवासीर, हीमोफीलिया, हेपेटाइटिस व गठिया आदि से पूर्ण मुक्ति संभव।

. सभी प्रकार के मानसिक रोगों जैसेः-तनाव, पागलपन, उन्माद, भय, चिंता, अनिद्रा आदि से पूर्ण मुक्ति संभव।

. सभी प्रकार के नशों जैसेः- शराब, अफीम, हेरोइन, भांग, तम्बाकू (बीड़ी, सिगरेट व जर्दा) आदि से बिना किसी परेशानी के छुटकारा।

. विद्यार्थियों की एकाग्रता एवं याद्दाश्त में नाम जप व ध्यान द्वारा अभूतपूर्व वृद्धि।

. आध्यात्मिकता के पूर्ण ज्ञान के साथ भूत, वर्तमान एवं भविष्य की घटनाओं को ध्यान के समय प्रत्यक्ष देखना और सुनना।

. गृहस्थ जीवन में रहते हुए 'भोग एवं मोक्ष' दोनों तत्त्वों की सहज प्राप्ति। इसके साथ ही जीवन की समस्त सांसारिक परेशानियों से छुटकारा।

. ईश्वर की प्रत्यक्षानुभूति एवं साक्षात्कार संभव।

www.the-comforter.org

क्या एक निर्जीव चित्र, सजीव (मानव) पर प्रभाव डाल सकता है ?

सद्गुरुदेव श्री रामलाल जी सियाग

प्रत्यक्ष को प्रमाण क्या ? ध्यान करके देखें।

शक्तिपात-दीक्षा

गुरुदेव सियाग सिद्धयोग आराधना की एक सरल विधि है। इसमें साधक को सघन मंत्र जाप व ध्यान करना होता है।

समर्थ सद्गुरुदेव श्री रामालाल जी सियाग एक सिद्धगुरु हैं जो शक्तिपात दीक्षा से, अपनी दिव्य शक्ति को संजीवनी मंत्र द्वारा शिष्य में संप्रेषित कर, उसकी सुप्तुप्त शक्ति, कुण्डलिनी को जाग्रत कर देते हैं।

गुरुदेव सियाग का संजीवनी मंत्र, एक चेतन (Enlightened) मंत्र है, इसमें प्राण प्रतिष्ठा की हुई है। इस मंत्र में असंख्य ऋषियों की कमाई है।

गुरुदेव की दिव्य वाणी में संजीवनी मंत्र सुनने के लिए डायल करें - 07533006009

(सभी जाति एवं धर्मों के जिज्ञासु स्त्री-पुरुषों को सस्नेह निमंत्रण)

www.the-comforter.org

ध्यान की विधि

- आरामदायक स्थिति में बैठकर थोड़ी देर के लिए गुरुदेव के चित्र को एकाग्रता से, खुली आँखों से देखें।
- फिर गुरुदेव से 15 मिनट के लिए ध्यान स्थिर करने की करूण प्रार्थना करें।
- अब आँखें बंद करके समर्थ सद्गुरुदेव श्री रामलाल जी सियाग के चित्र को अपने आज्ञाचक्र पर (जहाँ बिन्दी या तिलक लगाते हैं) केन्द्रित करते हुए, संजीवनी मंत्र का मानसिक जाप (बिना होंठ-जीभ हिलाए) करते रहें।
- इस दौरान कोई भी यौगिक क्रिया (आसन, बंध, मुद्रा या प्राणायाम) हो तो घबराएँ नहीं तथा न ही इन्हें रोकने का प्रयास करें। ध्यान की अवधि पूर्ण होते ही सामान्य स्थिति हो जाएगी।
- इस विधि से सुबह-शाम खाली पेट नियमित रूप से (केवल 15 मिनट) ध्यान करते रहें।
- नाम जप ही ध्यान की चाबी है। इसको तेल की धार की तरह, हर समय जपें।

Method of Meditation

- Sit in a comfortable position and look at Gurudev's image for a while.
- Then pray to Gurudev to help you meditate for 15 minutes.
- Now close your eyes and while focussing on Gurudev's image at the centre of your forehead, mentally chant (without moving your lips and tongue) the Sanjeevani Mantra given by Gurudev.
- During this time if you undergo automatic yogic movements, then let them happen. Don't try to stop them. After requested time is over, they will stop.
- Meditate in this way for 15 minutes, in the morning and evening, on an empty stomach.
- For profound meditation, chant the mantra as much as possible while performing your daily activities.

मुख्यालयः- अध्यात्म विज्ञान सत्संग केन्द्र, जोधपुर

होटल लेरिया के पास, चौपासनी, जोधपुर (राज.) 342001 सम्पर्क : +91-2912753699, +91-9784742595

Email: avsk@the-comforter.org, Website: www.the-comforter.org

R.N.I. NO. : RAJMUL/2008/26365*POSTAL REGD. NO. JODHPUR/269/01.01.2020 & VALID UP TO 31.12.2022

शोषणं पापपंकस्य दीपनं ज्ञानतेजसः ।
गुरोः पादोदकं सम्यक् संसारार्णवतारकम् ।।

अर्थ– गुरु का चरणोदक संसार रूपी सुमद्र से पार करने वाला तथा पाप रूपी कीचड़ को सुखाने वाला एवं ज्ञान और तेज को अच्छी प्रकार प्रकाशित करने वाला है ।।

– गुरु गीता

—— अवितरित प्रति निम्न पते पर लौटायें ——
Spiritual Science . स्पिरिचुअल साइंस
अध्यात्म विज्ञान सत्संग केन्द्र, जोधपुर
होटल लेरिया के पास, चौपासनी पोस्ट बॉक्स नं. 41, जोधपुर (राज.) 342001
फोन: + 91 291 2753699, मो. : +91 9784742595 वेबसाइट: www.the-comforter.org

मुद्रित सामग्री (Printed Matter)

सेवा में,

श्रीमान्_____

स्वत्वाधिकारी: अध्यात्म विज्ञान सत्संग केन्द्र, जोधपुर के लिए प्रकाशक व मुद्रक राजेन्द्र कुमार चौधरी के लिए, अध्यात्म विज्ञान सत्संग केन्द्र, होटल लेरिया के पास, चौपासनी, जोधपुर (राजस्थान) से प्रकाशित।